अक्तूबर २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

LET'S CELEBRATE NOVEMBER
OUR SPECIAL MONTH
WATCH OUT FOR THE
CHILDREN'S SPECIAL ISSUE
OF CHANDAMAMA IN NOVEMBER 2001
Exciting stories from child-writers!
Illustrations from child-artists!
Even the Vikram-Vetala story has come from a kid!
Jokes, riddles, games - all from children!
Your favourite comics, contributed by a child!
From kids, for kids
Don't miss Chandamama's Children's Special Issue!
A sparkler to light up your Diwali!

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०५ अक्तूबर - २००१ सञ्चिका - १०

भारत की गाथा
२५

सन्यासी के वरदान
१९

यक्ष पर्वत
११

एक लड़के ने बुद्धि बेची
२८

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणी

एक पढ़ा-लिखा बच्चा एक शिक्षक हो सकता है।

लगभग आधी शताब्दी से कुछ वर्ष पूर्व हमारे भाग्य का निर्णय करनेवाले विदेशी थे।

साधारण समस्या यह थी कि हमारे विद्यालय और महाविद्यालय एक फैक्टरी की भाँति विदेशी शासकों के लिए मात्र लिपिक (क्लर्क) पैदा कर रहे थे।

स्वतंत्रता के बाद हमने व्यवस्था को जैसे का तैसा रखते हुए परंतु पाठ्यक्रम में बदलाव करके एक नए विषय को प्रतिपादित करने का प्रयास किया। उसका नतीजा यह हुआ कि हमारे बेहतरीन मस्तिष्क अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने हेतु अब यहाँ पर मौजूद नहीं हैं।

हम लोगों ने शिक्षा के लिए जो भी किया, उसने हमें हजारों की संख्या में बेरोजगार लोगों की कतार दे दी। लेकिन उसी समय में हजारों की संख्या में लोग पूरे अनपढ़ भी रह गए। जनसंख्या का वह भाग जिस पर हमें अधिक ध्यान देना है, वह है हमारी किशोरा पीढ़ी बहुत लोगों को शिक्षा इसलिए नहीं मिल पायी क्योंकि वहाँ पर निकट कोई प्रारंभिक विद्यालय नहीं थे। बहुत से लोग स्कूल गए, किन्तु आधे में ही अपनी पढ़ाई छोड़ दी।

यदि नजदीक कोई स्कूल नहीं हैं या स्कूल उन्हें आकर्षित नहीं कर पा रहा, तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाएँ? शिक्षा के लिए चारदिवारी की एक कक्षा की आवश्यकता नहीं होती। किसी एक का अपना घर ही विद्यालय हो सकता है और आप लोग सौभाग्यशाली हैं। जो स्कूल जा सकते हैं, वे शिक्षक बन सकते हैं, उन बच्चों के लिए जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं है। जो कि आपके घर में काम करनेवाले लोग आसपास के अनपढ़ बच्चे आदि।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था, ''बालक-बालिकाओं को शिक्षित करके ही उनका शिक्षा का प्रतिपादन किया जा सकता है।''

ज्ञान बाँटने से ज्ञान बढ़ता है यदि यह सत्य है तो पढ़े-लिखे बच्चे जब अपने ज्ञान को औरों के साथ बाँटेंगे तो अवश्य उनका अपना ज्ञान भी बढ़ेगा। जो उन्हीं लोगों के आसपास के वातावरण के बारे में होगा।

इस अक्टूबर माह के लिए जब कि लोग नवरात्रि मनाते हैं और माँ सरस्वती की पूजा करते हैं, यह विचार बिल्कुल सटीक है।

सम्पादक : *विश्वम*

'भारत के नायक' प्रश्नोतरी में भाग लिजिए और जीतिए आकर्षक पुरस्कार

भारत के नायक-१

हैलो बच्चों! इस नायक प्रश्नोतरी पर ध्यान दो। सभी ऐतिहासिक महान नायकों और हस्तियों के बारे में यहाँ जानकारी दी गई है। हमें विश्वास है कि आप अवश्य इन्हें जानते होंगे!

तीन कुल सही उत्तरवाली प्रविष्टियों को पुरस्कार के रूप में एक-एक साईकिल मिलेगी।

1. मैंने भारत को १५२६ की चढ़ाई के बाद अपनाया। मेरी जीत में मुझे यश प्रदान किया। हमारे वंश का नामकरण मेरी माता के परिवार पर रखा गया। मैं कौन हूँ?

....

2. मैं उसको, खुबसूरत संयुक्ता को अपने घोड़े पर बिठाकर एक एक शांत स्थान पर ले गया। क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?

....

3. १७वीं शताब्दी में बनाया गया मोर मुकुट मेरे पास था। मैंने अपनी खूबसूरत पत्नी को बहुत प्यार किया और जब बह मर गई तो मैने एक .... बनवाया, नहीं यह आप बताईए और मेरा नाम भी!

....

4. मैंने ग्रीक राजकुमार से युद्ध किया और हार गया, लेकिन गर्व से कहा ''मुझे वही सम्मान दो जो एक राजा को देते हो!'' तुम्हे पता है मैं कौन हूँ?

....

मैंने एक कठिन युद्ध को जीता परन्तु उससे मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। मैंने हिंसा को सदा के लिये त्याग दिया। मेरा नाम बताओ!

....

रिक्त स्थानों को पूर्ति करो! इन पाँचों में से तुम्हारा पंसदीदा नायक कौन है? और क्यों? इतिहास के पन्नों में नायक'' पर १० शब्दों में कुछ लिखिए।...

....

....

प्रतियोगी का नामः ....

आयुः .... कक्षाः ....

पताः ....

....

पिनः .... फोनः ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षरः ....

माता/पिता के हस्ताक्षरः.......................

कृपया इस पन्नों को अलग करके 'भारत के नायक' प्रशनोतरी को भेजें। पताः चन्दामामा इन्डिया लिमिटिड
न ८२, डिफेंस आफिर्सस कालोनी
इकाडुथांगल चेन्नाई-६०० ०९७
और नवम्बर ५ से पहले भेज दें।

पुरस्कार के सौजन्य कर्ता हैं

चेतावनीः

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष के बच्चों के लिये हैं।
२. विजेता प्रविष्टियों के आधार पर चुने जाएँगे, जो सभी भाषाओं में होंगी। यदि एक से अधिक सभी पूर्ण सही प्रविष्टि मिली तो, विजेता अपनी क्षमता के आधार पर विजयी होगा।
३. निर्णायक मण्डल का निर्णय आखिरी होगा।
४. कोई भी पत्र व्यवहार इस बिषय पर नहीं देखा जायेगा।
५. विजेता को डाक द्वारा सूचना दे दी जायेगी।

अच्छा चोर

विद्याधर को बचपन से ही कविता में विशेष अभिरुचि थी। वह काव्य ढूँढ़-ढूँढ़कर लाता था और उन्हें पढ़ता था। काव्य के मुख्य भागों को वह कंठस्थ भी कर लेता था। दसवें साल ही में ही वह स्वयं कविताएँ रचते लगा था और मधुर कंठ में सुनाता भी था। एक बार उसका एक रिश्तेदार उसके घर आया। विद्याधर की कविताओं पर वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसके माँ-बाप से कहा, "विद्याधर को दंडकारण्य के वाणीनाथ के पास भेजियेगा। छः सालों के अंदर वे इसे सभी शास्त्रों में पारंगत बनायेंगे। आपके बेटे का भविष्य उज्जवल होगा।"

उस रिश्तेदार की सलाह विद्याधर के माँ-बाप को सही लगी। उन्होंने उसे दंडकारण्य भेजा। छः सालों तक वाणीनाथ के गुरुकुल में उसने शिक्षा पायी। उसने ध्यान लगाकर बड़ी ही श्रद्धा के साथ अध्ययन किया। गुरु वाणीनाथ भी उसके स्वभाव से अत्यंत प्रसन्न थे। उसकी बौद्धिक शक्ति की वे हमेशा भरपूर प्रशंसा करते थे। एक सप्ताह में वह घर लौटने ही वाला था कि एक दुर्घटना घटी।

वाणीनाथ के शिष्य विद्याधर को साथ लेकर कंद, मूल फल ले आने जंगल में गये। वे सब जब जंगल में घूम-फिर रहे थे, तब उन्होंने अचानक देखा कि कुछ लुटेरे यात्रियों को लूट रहे हैं। वाणीनाथ के शिष्यों को देखते ही लुटेरे भागने लगे। शिष्यों ने उनका पीछा किया। विद्याधर भी एक लुटेरे का पीछा करते हुए भागने लगा। वह लुटेरा पेड़ों के पीछे चला गया और आँखों से ओझल हो गया।

विद्याधर एक पेड़ के पीछे गया। वहाँ एक मुनि ध्यान-मग्न थे। विद्याधर को लगा कि यह कोई और नहीं, वह लुटेरा ही है, जिसका पीछा करते हुए मैं आया। इस भ्रम में आकर उसने मुनि से कहा, "मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो। वेष बदल देने मात्र से क्या तुम्हारा चेहरा पहचान नहीं सकूँगा?" कहते हुए उसने मुनि की दाढ़ी ज़ोर से खींची।

मुनि का तपोभंग हो गया। उन्होंने आँखें खोलीं और विषय जान जाने के बाद कहा, ''अरे मूर्ख, मुनि और लुटेरे के बीच का भेद न जाननेवाले तुम कैसे विद्यावान हो सकते हो? मुझे लुटेरा समझने की भूल की तुमने। श्राप देता हूँ कि एक साल तक हर दिन एक अपराध करोगे और चोर की तरह ज़िन्दगी गुज़ारोगे। तुमने ऐसा नहीं किया तो तुमने जो भी शिक्षा पायी, उसे भूल जाओगे।''

विद्याधर मुनि के पाँवों पर गिरा और क्षमा-भिक्षा माँगी। पर मुनि ने उसपर दया नहीं दिखायी। अंत में विद्याधर आश्रम लौटा और गुरु वाणीनाथ से सारी बातें सविस्तार बतायीं।

वाणीनाथ ने शिष्य को धैर्य देते हुए कहा, ''भाग्य में जो होना है, वह होकर ही रहेगा। जो हुआ, उसपर दुखी होने से और चुप बैठे रहने से कुछ होनेवाला नहीं है। एक साल तक अगर अपराध नहीं करोगे तो तुम्हारी शिक्षा व्यर्थ हो जायेगी। मेरी बात मानो और तुम कांभोज नगर जाओ। वहाँ अनगिनत संपन्न लोग हैं। यह तो सर्वविदित बात है कि इतनी भारी संपदा न्याय-मार्ग पर चलकर कमाई नहीं जा सकती। तुम उनके घरों में चोरी करो। एक साल तक अपराध करते रहना, पर इतना अवश्य याद रखना कि किसी भी हालत में तुम पकड़े न जाओ। यों अपराध करते हुए उस कला की बारीकियों को जान जाओगे। वह भी तो एक विद्या ही तो है। अपने अनुभवों का विवरण तालपत्रों में लिखते रहना। इससे भविष्य में शासकों और उनके गुप्तचरों को बड़ा फ़ायदा पहुँचेगा। उन्हें यह मालूम हो जायेगा कि चोर-चोरी कैसे करते हैं और उनके मनोभाव कैसे होते हैं।''

गुरु के कहे अनुसार ही विद्याधर कांभोज नगर गया। अपने चातुर्य को उपयोग में लाते हुए, हर दिन चोरी करने के तरीक़ों को बदलते हुए वह चोरियाँ करने लगा। नगर भर में होहल्ला मच गया। सब कहने लगे कि गजब का कोई चोर शहर में आ गया। सैनिकों ने बहुत कोशिश की, पर विद्याधर उनके हाथ नहीं आया।

गुरु की सलाह के मुताबिक विद्याधर अपनी चोरी के सारे विवरण तालपत्रों में लिखता गया। उनका वह संरक्षण करता गया। अब वह श्रीकर नामक मध्यम वर्ग के एक पारिवारिक व्यक्ति के घर में रहने लगा। उसके पांडित्य की प्रतिभा पर उस घर के सदस्य ही नहीं, बल्कि अड़ोस-पड़ोस के लोग भी चकित थे। उसका व्यवहार इतना अच्छा होता था कि किसी को उसपर संदेह ही नहीं हुआ। यों हर दिन चोरी करता हुआ दिन गिनने लगा। यों समय बीतता गया।

श्रीकर की चौदह साल की सोने की गुड़िया जैसी एक सुंदर पुत्री थी। विद्याधर की कविताओं

पर वह मुग्ध थी। उसके मुँह से उसकी कविताएँ सुनते हुए वह अपने आपको भूल जाती ती। एक बार वह उसे दिन भर दिखायी नहीं पड़ा। वह उसे ढूँढ़ती रही फिर वह उसके कमरे में गयी, जहाँ वह रह रहा था। वहाँ उसे कुछ तालपत्र दिखायी पड़े। उन्हें पढ़ते हुए उसे मालूम हो गया कि गजब का वह चोर कोई और नहीं, स्वयं विद्याधर ही है। उसे बड़ा आश्चर्य भी हुआ और धक्का भी लगा। उन तालपत्रों को लेकर वह कमरे से बाहर जा रही थी कि विद्याधर वहाँ आ गया। वहाँ क्या हुआ, जानने में उसे देरी नहीं लगी।

"इस नगर में कल तक ही रहूँगा। तब तक किसी दूसरे को मेरे विषय में मालूम होना नहीं चाहिए। तुम्हें मेरे बारे में मालूम हो गया। तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा। किसी को मालूम भी नहीं होगा कि मैंने तुम्हारी हत्या की और कैसे की" विद्याधर ने कहा।

श्रीकर की बेटी डर के मारे थर-थर काँपने लगी। उसने कहा, "तुमने लिख रखा है कि कल तुम क्या करने जा रहे हो। यह मैंने पढ़ लिया। फिर भी तुम्हारे बारे में किसी को नहीं बताऊँगी। मेरा विश्वास करो! मुझे मत मारो!"

विद्याधर ने उसकी बात का विश्वास किया और उसे जाने दिया। किन्तु उसने अपना वचन नहीं निभाया। जो हुआ, सब अपने पिता को बता दिया। उसके पिता ने नगर के रक्षक को इसकी शिकायत की। दूसरे दिन दुपहर को जब विद्याधर चोरी कर रहा था, चूँकि पहले ही इसका पता लग चुका था, सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और जेल में डाल दिया।

इस समाचार ने नगर में तहलका मचा दिया। नगरपालक ने खुली सभा बुलवायी। तब विद्याधर ने अपनी कहानी सुनायी। सब कुछ सुनने के बाद नगरपालक ने कहा, "तुम्हारी कहानी पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। फिर भी तुम्हारे बताये वाणीनाथ के पास दूत भेजूँगा और सच्चाई जानूँगा। मेरे कुछ संदेह हैं, जिन्हें तुम्हें दूर करना होगा। तुम पंडित हो। तुमने कैसे विश्वास कर लिया कि गुरु के बर देने मात्र से तुम्हारे अपराध छिप जाएँगे, लोगों को मालूम नहीं हो पायेगा। अब आख़िरी अपराध में तुम पकड़े गये और गुरु का दिया वह बर निष्फल हो गया।"

"मैं अपने अपराधों का प्रायश्चित वरों की आड़ में करना नहीं चाहता। इसीलिए हर चोरी के विवरण मैंने लिख रखे। मैंने संपन्न लोगों के घरों में चोरियाँ कीं। मेरी चोरियों से किसी सामान्य व्यक्ति को नष्ट नहीं पहुँचा है। वह सारा धन मेरे पास सुरक्षित है। श्राप से डरने के कारण ही मैंने ऐसा किया इसलिए शाप की अवधि की पूर्ति के बाद वह धन उन सबको लौटा दूँगा। मेरा विश्वास है कि ऐसा करने पर मेरे

अपराधों का प्रायश्चित होगा।'' विद्याधर ने कहा।

नगरपालक ने मुस्कुराते हुए कहा, ''तुम्हारे विश्वास पर उसी क्षण पानी फिर गया, जिस क्षण तुमने श्रीकर की बेटी पर विश्वास किया। अगर सचमुच ही शाप से तुम्हें भय होता तो उसकी हत्या कर देते। तुमने ऐसा नहीं किया, इसलिए मैं तुमपर शंका कर रहा हूँ, तुम्हारी कहानी पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।''

तब विद्याधर ने हाथ जोड़कर कहा, ''महाशय, कृपया मेरी बातें ध्यान से सुनिये। लौटा सकनेवाली चोरियाँ ही मैंने कीं। श्रीकर की बेटी की जान ले लूँ तो उसे उसकी जान लौटाने की शक्ति या सामर्थ्य मुझमें नहीं है। इसीलिए मैंने उसे नहीं ममारा। केवल धमकी मात्र दी। उसकी हत्या न करने के कारण पूरे साल की मेरी मेहनत बेकार गयी। यह जानते हुए भी कि शाप के कारण मैं अशिक्षित बन जाऊँगा, मैंने वह काम नहीं किया।''

''इसी बात पर मुझे आश्चर्य हो रहा है'' नगरपालक ने कहा। ''तो मेरी बातें सुनिये। चोरों में भी अच्छे चोर होते हैं। कोई और चारा न होने के कारण ही वे चोरियाँ करते हैं। संभव हो तो चोरी की सामग्री किसी न किसी दिन वे लौटाने की इच्छा रखते हैं। जो नहीं दे सकते, वे उन्हें छूते तक नहीं। मुनि शाप का शिकार मैं अच्छा चोर हूँ। कुछ लोग ग़रीबी के शाप से चोर बनते हैं। उन्हें लाचार होकर अपनी जीविका के लिए चोरी करनी पड़ती है। ऐसे लोगों में परिवर्तन लाने के लिए, उनकी सहायता करने के लिए मेरी यह कहानी उनके उपयोग में आयेगी।'' विद्याधर ने कहा।

उसकी इन बातों पर उपस्थित जनता ने तालियाँ बजायीं। नगरपालक ने विद्याधर को केवल रिहा ही नहीं किया बल्कि उसका सम्मान भी किया।

चोरियाँ करते हुए विद्याधर ने अपने जो अनुभव लिख रखे, उनसे अधिकारियों और गुप्तचरों को पर्याप्त लाभ पहुँचा। उन्हें पढ़ने के कारण वे चोरों पर काबू रख सके, चोरियाँ बहुत हद तक रोक पाये। अब राज्य में चोरियों की संख्या नहीं के बराबर हो गयी। कहीं कभी-कभार चोरी हुई होगी, पर किसी ने भी कोई हत्या नहीं की।

यक्ष पर्वत

10

(बीरपुर राजा की आज्ञा के अनुसार सेनाध्यक्ष घुड़सवारों व कुछ सैनिकों को लेकर गया। उसने पर्वत पर बसे स्वर्णाचारी व समरबाहु के अनुचरों को अपने वश में हो जाने के लिए कहा। किन्तु समरबाहु के अनुचरों ने अपनी हार नहीं मानी और वे धड़ाधड़ बीरपुर के सैनिकों पर बर्छियों की बौछार करने लगे। उनमें से एक बर्छी सेनाध्यक्ष के कंधे में चुभ गयी और वह घायल हो गया।) - अब आगे.

बर्छी कंधे में घुस जाते ही सेनाध्यक्ष चिल्ला पड़ा और कराहता हुआ घोड़े से नीचे गिर गया। उसके साथ-साथ वह बर्छी भी बग़ल में गिर गयी, जो उसके कंधे में लग गयी थी। सैनिक उसे दूर ले गये और मरहमपट्टी करने लगे।

समरबाहु के अनुचरों की प्रशंसा करते हुए स्वर्णाचारी ने कहा, ''पहले ही बार में हमने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये। हालांकि हम यहाँ कुल मिलाकर छब्बीस ही हैं, पर शत्रु समझ गये होंगे कि हम कितने बहादुर हैं। उन्हें शायद लगता भी होगा कि हम यहाँ बड़ी संख्या में मौजूद हैं।''

यह बात सुनते ही समरबाहु के अनुचरों में से एक ने कहा, ''आचार्य महामंत्री, शत्रुओं ने साहस करके अगर पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश की भी तो हमसे नियुक्त जंगली जन उन्हें तरह-तरह से सतायेंगे, उन्हें आगे बढ़ने नहीं देंगे। सिंह और बाघ उन पर टूट पड़ेंगे और शत्रुओं को तितर-बितर कर देंगे।''

समरबाहु के दो और अनुचरों ने कहा, ''महामंत्री जी, आज्ञा दीजिए। हम सब इकट्ठे होकर जाएँगे, उन पर टूट पड़ेंगे और अपने भालों का शिकार बनायेंगे। उनके घोड़ों को पकड़कर अपने बश में कर लेंगे।''

स्वर्णाचारी ने उन्हें समझाते हुए कहा,

''शत्रु संख्या में हमसे दस गुना अधिक हैं। इसलिए जल्दीबाजी अच्छी नहीं। हमारे सब ऊँटों को पहाड़ के उस पार के नीचे सुरक्षित रखा है न?''

''वे सबके सब एक ही जगह पर सुरक्षित हैं। हमारे दो आदमी उनकी रखवाली भी कर रहे हैं। शत्रु वहाँ तो हम यहाँ। ठीक है न?'' समरबाहु के अनुचर ने कहा।

उनकी बातों पर स्वर्णाचारी ने हँसकर कहा, 'इस भ्रम में न रहो कि लड़ाई ख़तम हो चुकी।'' कहते हुए उसने वीरपुर के सैनिकों को दिखाया, जो घोड़े पर सवार हो रहे थे।

उन्होंने उनपर से देखा कि दो सैनिकों ने घायल सेनाध्यक्ष को घोड़े पर बिठाया। उनकी समझ में भी आया कि वे पहाड़ पर चढ़ने के लिए सुगम मार्ग ढूँढ़ रहे हैं।

स्वर्णाचारी ने समरबाहु के अनुचरों को सावधान किया और कहा कि शत्रु सैनिकों पर बर्छियाँ व भाले फेंकने के लिए वे तैयार रहें। फिर वह एक अनुचर को लेकर वहाँ गया, जहाँ जंगली जन, पिंजडे में बंद सिंह व बाघ थे।

सिंह का एक पिंजड़ा एक गुफ़ा द्वार के सामने था। बाघों के पिंजड़े दूसरी गुफ़ा-द्वार पर थे। उन पिंजड़ों पर दो-दो जंगली जन बैठे हुए थे।

स्वर्णाचारी को देखते ही जंगली जनों के सरदार ने कहा, ''वीरपुर के सैनिक पहाड़ पर चढ़कर जैसे ही पास आयेंगे, पिंजड़ों के द्वार खोल दिये जायेंगे और हमारे लोग गुफ़ा के ऊपरी भाग पर भाग जायेंगे। भूखे ये क्रूर मृग शत्रुओं पर टूट पड़ेंगे और उन्हें खा जायेंगे।''

उनके इस प्रबंध पर स्वर्णाचारी बहुत खुश हुआ। वह फिर समरबाहु के अनुचरों के पास लौटा और पहाड़ के नीचे की ओर देखा। वीरपुर के सेनाध्यक्ष की आज्ञा का पालन करते हुए सैनिक पैदल ही पहाड़ पर चढ़ने लगे। उनमें से कुछ लोगों के पास धनुष-बाण हैं।

समरबाहु के अनुचर जब कभी भी भाले या बर्छियाँ बरसाते थे तब वे सैनिक रुक जाते थे और बाण चलाते थे। इतने में कुछ घुड़सवार व सैनिक पीछे से पहाड़ पर चढ़ने लगे।

स्वर्णाचारी ख़तरे को ताड़ गया। समरबाहु के अनुचरों को धैर्य दिलाते हुए वह कहने लगा, ''उष्णवीरों, तुममें से कुछ लोग शत्रुओं पर बड़े-बड़े पत्थरों को ढकेलो। कुछ लोग उनपर बर्छियाँ, भाले फेंकने जाओ। यह काम लगातार करते जाना।''

समरबाहु के अनुचर बड़े-बड़े पत्थरों को ढकेलते हुए गिराने लगे और पैदल पहाड़ पर चढ़े आ रहे वीरपुर के सैनिकों की ओर ढकेलने लगे। किन्तु इनमें से ज़्यादा पत्थर उतार-चढ़ाव में गिरते-उठते अन्य मार्ग पर फिसलकर जाने लगे।

वीरपुर के सैनिक यह देखकर खुश होने लगे और बड़े उत्साह के साथ आगे बढ़ने लगे। उनके पीछे-पीछे आ रहे घुड़सवारों के हाथों में नंगी तलवारें थीं और वे अपने राजा की जयजयकार करते हुए आ रहे थे।

इतने में अकस्मात सिंहों का और बाघों का गर्जन सुनायी पड़ने लगा। सिंह और बाघ पिंजड़ों से बाहर आकर वीरपुर के सैनिकों पर टूट पड़ने लगे। इस आकस्मिक आक्रमण का सामना करने के लिए वे तैयार नहीं थे। काफी खलबली मचने लगी। पीछे आते हुए घोड़े एकदम डर गये और बेतहाशा इधर-उधर भागने लगे। कुछ घोड़े तो फिसलकर घुड़सवारों के साथ-साथ पहाड़ के नीचे जा गिरे। अब सिंहों व बाघों के सामने कोई नहीं रहा, इसलिए वे पास ही के जंगल में भाग गये।

जो भी हुआ, स्वर्णाचारी बहुत खुश हुआ। उसने समरबाहु के अनुचरों से कहा, ''जो मरे और जो घायल हुए, उनके अलावा बहुत-से और सैनिक पहाड़ के नीचे हैं। फिर से वे हमपर हमला करेंगे तो उनका सामना करने की शक्ति हममें नहीं है। नीचे हमारे जो ऊँट हैं, उनपर सवार होकर जंगल की ओर भाग जाना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। हो सकता है, वहाँ हम क्षत्रिय युवक और

समरबाहु महाराज से भी मिल पाएँ। अब यहाँ से अभी निकलो और वहाँ पहुँच जाओ, जहाँ ऊँटें हैं!'' कहते हुए वह आगे बढ़ा और उसके पीछे-पीछे बाक़ी लोग भी निकले।

परंतु जब वे सबके सब निर्धारित स्थल पर पहुँचे और ऊँटों पर सवार होकर उनपर आने लगे तब उन्होंने देखा कि दो सौ गजों की दूरी पर चालीस-पचास वीरपुर के घुड़सवार तलवारें, भाले लिये उन्हीं की तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं।

यह दृश्य देखते ही स्वर्णाचारी ने तलवार उठायी और उन्हें संबोधित करते हुए कहा, ''उष्ण योद्धाओं, मेरे साथ-साथ आना। दुर्ग की देवी पर शत्रुओं की बलि चढ़ायेंगे। समरबाहु महाराज की जय।'' फिर वे सबके सब आगे बढ़े। इसी समय पर वीरपुर के घुड़सवार भी ''वीरसिंह महाराज की जय'' का नारा लगाते हुए तेज़ी से आगे बढ़े

और समरबाहु के अनुचरों पर टूट पड़े।

स्वर्णाचारी निधड़क उनका सामना करने आगे बढ़ा, जिसे देखते हुए समरबाहु के अनुचरों में भी उत्साह भर आया और शत्रुओं से जूझने निकल पड़े। तब उन दोनों ओर के सैनिकों के बीच घमासान लड़ाई हुई।

पाँच मिनिटों तक यह लड़ाई जारी रही, जिसमें समरबाहु के कुछ अनुचर व वीरसिंह के चंद सैनिक घायल हुए। वे घोड़ों व ऊँटों से नीचे गिर पड़े। स्वर्णाचारी ने अपने लोगों को सावधान किया और बचे-खुचे दस-पंद्रह समरबाहु के अनुचरों को लेकर शत्रुओं के बीच में से होते हुए पास ही के अरण्य की ओर भाग निकला।

तभी वहाँ पहुँचा घायल सेनाध्यक्ष। भाग निकले स्वर्णाचारी व उसके अनुचरों को देखते हुए उसने कहा, "आखिर उनकी संख्या ही क्या है। आप लोगों ने उन्हें कैसे भाग जाने दिया। यह हमारा घोर अपमान है। हमारी अशक्ति, असमर्थता का द्योतक है। मैंने जिस अश्वनायक को भेजा था, वह है कहाँ? ज़िन्दा है या मर गया?" वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए पूछ रहा था।

यह चिल्लाहट सुनते ही अश्वनायक सेनाध्यक्ष के सामने आया। उसे गुर्राकर देखते हुए सेनाध्यक्ष ने कहा, "उसके तन पर न ही कुर्ता है, न ही दुपट्टा। दुबला, पतला वह आदमी महायोद्धा वीरपुर के सैनिकों को चकमा देकर जंगल में भाग गया। उसने तो हमारे कुछ सैनिकों को मार डालने का दुस्साहस भी किया। यह कितनी शर्मनाक बात है। तुम्हें चल्लू भर पानी में डूब मारना चाहिए। महाराज को यह बात मालूम हो जाए तो हम दोनों को फांसी पर चढ़ा देंगे।"

दलनायक ने कंपकंपाते हुए स्वर में कहा, "सेनाध्यक्ष, वह कोई साधारण आदमी नहीं है। देखने में सीधा-सादा, बलहीन और प्रभावहीन लगता है, पर है शूर, बुद्धिमान व चतुर। उसके अनुचर उसे महामंत्री कहकर संबोधित करते हैं। उसकी रूपरेखाओं, उसके पराक्रम को देखते हुए लगता है कि वह महाभारत का योद्धा।"
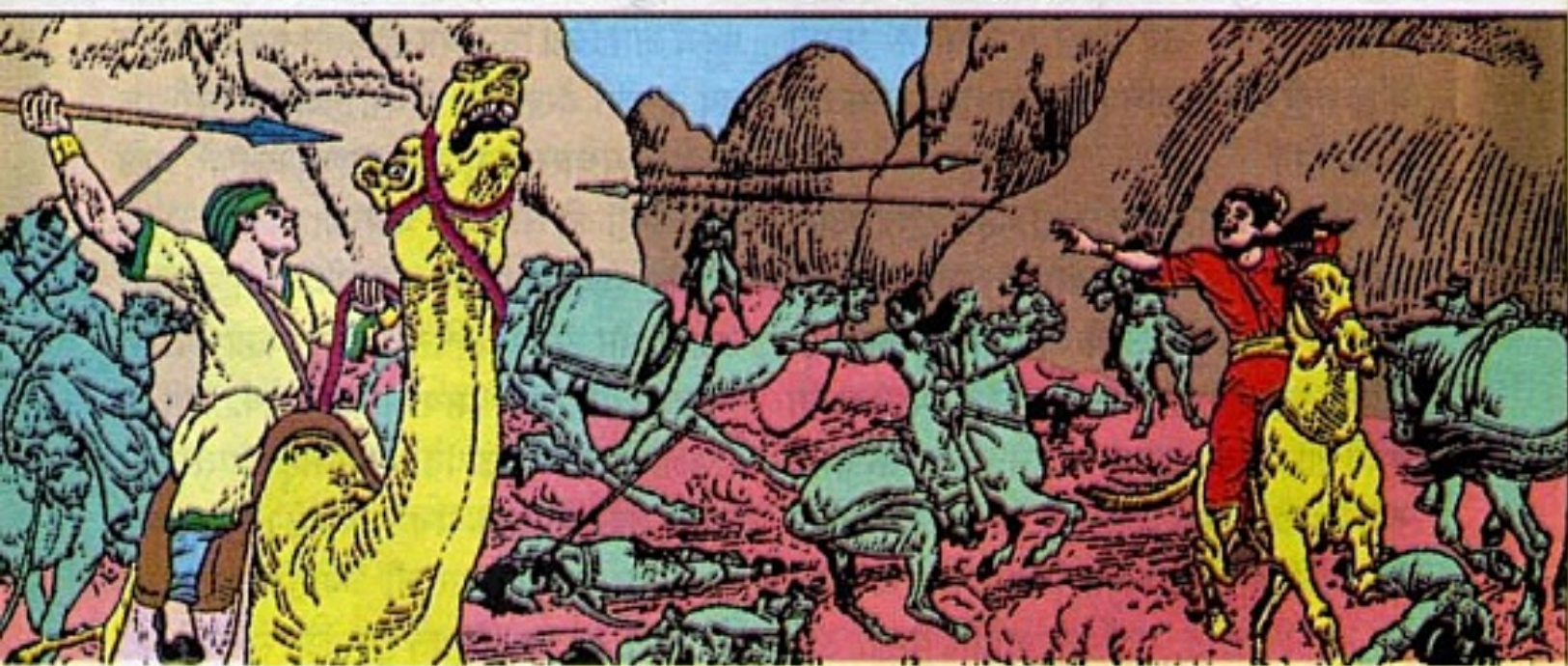
दलनायक अपनी बात पूरी करे, इसके पहले ही सेनाध्यक्ष ने ऊँचे स्वर में कहा, ''अपनी कविता बंद करो! चुप हो जाओ! अभी पाँच सैनिकों को लेकर निकल पड़ो और जंगल में प्रवेश करो। देखो, वे लोग कहाँ छिपे हैं। इतने में मैं पहाड़ी दुर्ग को अपने अधीन कर लूँगा और वीरपुर राज्य के झंडे को इस पर फहराऊँगा। फिर अपने सैनिकों को लेकर जंगल में आऊँगा। तुरंत मेरे आदेश का पालन करो।''

दलनायक वहाँ से निकल पड़ा। पर स्वर्णाचारी तब तक बहुत दूर जा चुका था। रास्ते में उसने एक सरोवर देखा। स्वर्णाचारी व समरबाहु के अनुचर उस सरोवर के पास रुक गये। पानी पी लिया और ऊँटों को भी पानी पिलाया। फिर उन्हें चरने आज़ाद छोड़ दिया।

यों आधा घंटा बीत गया। समरबाहु के दो अनुचर खाने के लिए फलों की खोज में लग गये। सरोवर की ही तरफ बढ़ चले आते हुए रीछ के गिरोहवालों को उन दोनों ने देख लिया। वे दौड़े-दौड़े गये और स्वर्णाचारी को यह समाचार सुनाया।

''अच्छा हुआ, ये लोग यहाँ दिखायी पड़े। इसी गिरोह के आदमियों ने हमारे समरबाहु महाराज को क़ैद किया था।'' स्वर्णाचारी ने कहा। इतने में रीछ के गिरोहवाले सरोवर के पास आ पहुँचे। उनमें से एक ने चरते हुए ऊँट को देखते हुए कहा, ''माँ वृकेश्वरी, अब तुम्हारा ही भरोसा है।'' कहते हुए उसने और लोगों को ऊँट दिखाया।

दूसरे ही क्षण स्वर्णाचारी और समरबाहु के अनुचर पेड़ों बीच में से ''समरबाहु महाराज की

जय'' करते हुए बाहर आये और हाथों में भाले लिये उनकी तरफ़ बढ़े। उन्हें देखकर रीछ के गिरोहवाले हताश हो गये और कहने लगे, ''माँ वृकेश्वरी, यह तुमने क्या कर दिया। हम बस, ख़तम हो गये।'' फिर वे भाग निकले।

भागे जारहे उन रीछवालों को रास्ते में दिखायी पड़े खड्ग, जीवदत्त, समरबाहु और गुरु भल्लूक। उन्होंने स्वर्णाचारी के बारे में उन्हें बताया।

''स्वर्णाचारी तो दुर्ग के निर्माण के काम पर लगा हुआ है। भला उसका यहाँ आना कैसे हुआ? कहीं आफ़तों में फंस तो नहीं गया और भागकर यहाँ चला आया'' जीवदत्त ने अपना संशय प्रकट किया।

''स्वर्णाचारी बड़ा ही राजभक्त है। हो सकता है, रीछ के गिरोहवालों से मुझे बचाने के लिए निकला हो और यहाँ पहुँच गया हो'' समरबाहु ने संतुष्ट होते हुए कहा।

यों बातें करते हुए वे सरोवर के पास पहुँचे। उन्हें देखकर स्वर्णाचारी बहुत खुश हुआ। उनके पास दौड़ा-दौड़ा आया और कहने लगा, ''समरबाहु महाराज, क्षत्रिय योद्धाओं, मेरा नमस्कार।'' झुककर प्रणाम करते हुए उसने कहा।

''स्वर्णाचारी, लगता है कि क़िले के निर्माण का कार्य पूरा किये बिना ही अरण्य में बिहार करने चले आये हो'' जीवदत्त ने कहा।

''क्षत्रिय योद्धाओं, उस क़िले पर शत्रुओं ने कब्जा कर लिया। वह उनके अधीन हो गया। मैंने और समरबाहु के सैनिकों ने उसकी रक्षा करने का यथासाध्य प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में कुछ अनुचर स्वर्ग भी सिधारे '' स्वर्णाचारी ने दुख-भरे स्वर में कहा।

''अब कितने और अनुचर बाक़ी रह गये?'' खड्गवर्मा ने पूछा। ''मुझे भी मिलाकर सोलह लोग बचे हैं। हमारी सवारियाँ ऊँट भी यहीं हैं'' स्वर्णाचारी ने कहा।

''क्या कहा? दुर्ग पर शत्रुओं का आक्रमण हुआ? दुर्ग को उन्होंने अपने अधीन कर लिया? वे शत्रु कौन हैं?'' समरबाहु ने दांत पीसते हुए मूँछों पर उँगलियाँ फेरते हुए कर्कश स्वर में पूछा।

स्वर्णाचारी ने पूरा वृत्तांत सुनाया।

पूरा का पूरा वृत्तांत सुनने के बाद समरबाहु ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''इसका यह मतलब हुआ कि किले के साथ-साथ हमने जो धन इकट्ठा कर रखा था, वह भी दुश्मनों के अधीन हो गया। वीरपुर का महाराज क्षमा के योग्य नहीं रहा। उसका अंत देखना ही होगा। खड्ग, जीवदत्त, आपकी सहायता के बिना मेरा यह लक्ष्य पूरा नहीं होगा।''

जीवदत्त ने एक क्षण भर तक सोचने के बाद कहा, ''समरबाहु, तुम उनमें से तो नहीं हो, जिसने अपना राज्य खो दिया हो। फिर वीरपुर के राजा से बदला लेने का सवाल ही कहाँ उठता है। मेरी तो सलाह है कि इस अरण्य के किसी भाग में अपने अनुचरों के साथ बस जाओ और फ़सल उगाकर आराम से ज़िन्दगी काटो। इससे तुम हर चिंता से मुक्त रह सकते हो।''

समरबाहु ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। सिर झुकाकर चुप रह गया। तब स्वर्णाचारी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''क्षत्रिय योद्धाओं, मेरी एक विनती है। इनके नाम से ही यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये किसी बड़े क्षत्रिय कुल के हैं। ऐसे महाराज के पास मंत्री बनकर काम करने की मेरी तीव्र इच्छा है। मुझे पूरा विश्वास

है कि आपकी सहायता मिले तो यह संभव हो सकता है।

वीरपुर के राजा को इन पहाड़ी प्रांतों से दूर भगाया जा सकता है। इससे पहाड़ी दुर्ग व आसपास के जंगली गाँवों को मिलाकर एक राज्य बन सकता है। और यह हो पायेगा, केवल आप लोगों की सहायता से ही।''

जीवदत्त ने खड्गवर्मा को देखते हुए कहा, ''खड्ग, इनकी इतनी सहायता पहुँचाना ठीक ही होगा।'' फिर वह स्वर्णाचारी व समरबाहु की ओर मुड़कर बोला'' हमें पहले वीरपुर के सैनिकों की खबर लेनी होगी। गिनती में हम लोग उनकी तुलना में बहुत कम हैं, इसलिए उनसे सीधे युद्ध करके जीतना संभव नहीं होगा। किसी उपाय से ही यह संभव होगा। इसके लिए यह ज़रूरी है कि उन सारे सैनिकों को गुरुभल्लूक के बिल में ले आयें।''

''यह कैसे संभव होगा, जीवदत्त प्रभु?'' अपना संशय व्यक्त करते हुए स्वर्णाचारी ने पूछा।

''इसका एक मार्ग है। गुरुभल्लूक के शिष्यों में से दो-तीन शिष्य वीरपुर के सैनिकों के सरदार के पास जाएँगे और उससे कहेंगे कि हम सब उस बिल में छिपे हुए हैं। वे हमें मार डालने बिल में प्रवेश करेंगे।'' इतना कह चुकने के बाद जीवदत्त अचानक रुक गया और फिर गुरु भल्लूक से उसने कहा, ''भल्लूक, तुम्हारे शिष्य किसी भी हालत में तुम्हारी बात को नहीं टालेंगे। तुम साफ़-साफ़ बताओ कि यह सच है या नहीं? कहीं वे गुरु द्रोह करनेवालों में से तो नहीं है न?''

यह सवाल सुनते ही गुरु भल्लूक क्रोधित हो उठा और बोला, ''सरकार, मैं आज्ञा दूँ तो वे पहाड़ की चोटी से भी गिरने के लिए सन्नद्ध रहते हैं। चूँकि यहाँ इतना बड़ा पर्वत नहीं है, इसलिए मेरी आज्ञा है कि इनमें से मेरा एक शिष्य उस वृक्ष के बिल्कुल ऊपर ही टहनी से कूदे।''

जीवदत्त ना ना कह ही रहा था कि इतने में एक रीछवाला दौड़ा-दौड़ा गया, बड़े वृक्ष पर चढ़ गया, रेंगता हुआ आख़िरी टहनी तक पहुँच गया और कहने लगा, ''गुरु भल्लूक, मेरा अंतिम नमस्कार स्वीकार कीजिए।'' कहता हुआ औंधे मुँह ज़मीन पर गिरने लगा। *- क्रमशः*

राजनर्तकी का चित्र

बहुत पहले की बात है। अवंती नगर में सुहर्ष नामक एक युवक चित्रकार रहा करता था।

नगर में ऐसे तो अनुभवी कितने ही चित्रकार थे, पर सुहर्ष की चित्रकला की भूरि-भूरि प्रशंसा होती थी। धनिक व्यापारी और राजकुटुम्ब के सदस्य तो उसकी कला की प्रशंसा के पुल बांधते ही रहते थे। जब वह किसी का चित्र बनाता और वह व्यक्ति उसकी अच्छाई व बुराई पर टिप्पणी करता तो सुहर्ष चुपचाप सुन लेता था। अगर जवाब भी देता तो ऐसा देता, जिससे उनके मन को ठेस न लगे। किसी के मन को चोट पहुँचाने का काम वह कभी भी नहीं करता था।

राजनर्तकी भासुरांगी ने उसकी ख्याति सुनी। उससे अपना एक चित्र बनवाया। फिर उसने उसके नैपुण्य की प्रशंसा करते हुए कहा, ''स्त्री सौंदर्य तथा नाट्य कला के बारे में जानकारी रखनेवाले कितने ही दिग्गज इस राजधानी में मौजूद हैं। इस देश के राजा भी इन्हीं दिग्गजों में से एक हैं। उन सबने मेरे सौंदर्य की प्रशंसा की। उन सबका यह भी कहना है कि विश्व भर में ऐसी सौंदर्य-राशि नहीं होगी। उनकी प्रशंसा झूठी प्रशंसा नहीं है। उसमें सत्य कूटकूटकर भरा हुआ है। तुम्हारे चित्र को देखते हुए मुझे भी विश्वास हो गया है कि उनकी प्रशंसा सची व वास्तविक है।''

दस सालों के बाद भासुरांगी फिर से सुहर्ष के पास आयी और विनती की कि वह पुनः उसका चित्र बनाये। उसने इस काम में काफ़ी मेहनत की और एक महीने के अंदर उसके चित्र को बनाने का काम समाप्त किया।

भासुरांगी अपने उस चित्र को देखकर खोज उठी और बोली, ''सुहर्ष, अपने इस चित्र को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। मुझे यह विश्वास ही नहीं हो रहा है कि यह मेरा चित्र है। मेरे उस रूप को देखकर ही क्या इतने लोगों ने मुझे अपूर्व सुंदरी कहा!

बड़े ही शांत व कोमल स्वर में सुहर्ष ने कहा, ''देवी भासुरांगी, मैंने उस समय तुम्हारा जो चित्र बनाया था, उस समय मेरी उम्र अब से दस साल कम थी।''

- सुमनलता.

सन्यासी के वरदान

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, मेरी समझ में नहीं आता कि इस आधी रात को इतनी तक़लीफें क्यों झेल रहे हो? तुम्हें ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी? क्या किन्हीं अद्‌भुत शक्तियों को पाने का इरादा है? या किसी की भलाई करने के उद्देश्य से ऐसा करने पर तुले हो? परंतु तुम जानते नहीं कि पायी गयी ऐसी अद्‌भुत शक्तियों के परिणाम बड़े ही विचित्र होते हैं। उनका प्रभाव समय-समय पर बदलता रहता है। उदाहरण के लिए तुम्हें शंकर और कालिपाद नामक दो व्यक्तियों की कहानी सुनाता हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए

करके शाम को घर लौटता था। ऐसे सुस्त और निकम्मे बेटे से अपनी शादी करने के अपराध में वह अपने ससुर से बहुत नाराज़ रहती थी। बात-बात पर वह अपने ससुर को खरी-खोटी सुनाती थी। अनाप-शनाप बकती रहती थी। उसे तरह-तरह से सताने लग गयी। मन ही मन उसने अपने ससुर से बदला लेने का निश्चय कर लिया।

कुछ दिनों के बाद धर्मपाल की मृत्यु हो गयी। तब से शंकर की मुसीबतें बढ़ती गयीं। कनका उस पर अपना शासन जमाने लगी और उसे सताने लगी।

एक दिन शंकर का एक दोस्त उसे देखने आया। वह एक शहर में रहता था। शंकर ने अपनी पत्नी से कहा, ''आज मेरा दोस्त भी मेरे साथ खाना खायेगा। उसके लिए भी रसोई बनाना।'' यह सुनते ही कनका आग-बबूला हो उठी और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी, ''फूटी कौड़ी कमाने की योग्यता भी तुममें नहीं है। एक तो तुम्हें खाना खिलाना भी बेकार है, तिसपर तुम्हारे दोस्त के लिए भी रसोई बनाऊँ? यह कोई सराय नहीं है, जहाँ ऐरे-गैरे को भी खाना खिलाती रहूँ।''

शहर से आया शंकर का दोस्त उसकी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया। वह बिना कुछ कहे तुरंत वहाँ से चला गया। शंकर से यह अपमान सहा नहीं गया। पत्नी के इस रवैय्ये से असंतुष्ट शंकर घर छोड़कर चला गया।

शंकर जंगल से होता हुआ जाने लगा। अंधेरा छा रहा था। इतने में उसे एक आवाज़ सुनायी पड़ी, ''तुम कौन हो? देखते नहीं, अंधेरा छा रहा

उनकी कहानी मुझसे सुनो।'' फिर वह यों उनकी कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। बराल नामक देश के एक छोटे-से गाँव में धर्मपाल नामक एक किसान रहा करता था। शंकर उसका इकलौता बेटा था। उसकी माँ उसके बचपन में ही स्वर्ग सिधार चुकी थी। धर्मपाल ने तब से उसे बड़े लाड-प्यार से पाला-पोसा। इस लाड-प्यार की वजह से उसने पढ़ाई-लिखायी नहीं की। वह बड़ा ही सुस्त निकला। पिता ने सोचा कि शादी कर देने से वह ठीक हो जायेगा। इसलिए उसने शंकर की शादी कनका नामक एक कन्या से कर दी।

पत्नी कनका ने भी अपने पति को सुधारने की बड़ी कोशिश की, पर कोई फायदा नहीं हुआ। शंकर पेट भर खाता था और गाँव भर में मटरगस्ती

है। जंगले में और आगे-आगे बढ़ते जाना ख़तरे से खाली नहीं।'' शंकर ने उस तरफ़ मुड़कर देखा, जहाँ से यह आवाज़ आ रही थी।

पास ही के एक ऊँचे टीले पर एक सन्यासी आसन लगाये बैठा हुआ था। शंकर तेज़ी से उस सन्यासी के पास गया और उसे ध्यान से देखने लगा। उसके मुँह पर अनोखी तेजस्विता स्पष्ट गोचर होने लगी।

शंकर श्रद्धापूर्वक उसके पाँवों के पास बैठ गया और उसे अपनी दुख-भरी कहानी सुनायी। उसने अपनी चुड़ैल पत्नी के बारे में सविस्तार बताया। फिर आगे कहा, ''स्वामी, अब मुझमें इतनी सहनशक्ति नहीं कि शेष जीवन अपनी पत्नी के साथ गुज़ारूँ। उसे सुधारने का, एक अच्छी पत्नी बनाने का भार अब आप पर ही है। आपसे यह नहीं हो सका तो यहीं आपके पैरों के पास पड़ा रहूँगा और आपकी सेवा करते हुए यहीं रह जाऊँगा।''

सन्यासी ने उसे पहले नाराज़ी से देखा, पर फिर हँसते हुए आँखें बंदकर लीं। बग़ल में ही रखे हुए कमंडल से पानी अपने हाथ में उंडेला और कहने लगा ''कनका की कर्कशता संपूर्ण रूप से मिट जाए।'' फिर उसने पानी ज़मीन पर डाल दिया।

बाद में सन्यासी ने शंकर से कहा, ''इस घोर अंधकार में आगे बढ़ने से तुम्हारी जान को ख़तरा हो सकता है। पलटकर जाने में ही अच्छाई है। मैं आश्वासन दिलाता हूँ कि इससे तुम पर कोई आफ़त नहीं आयेगी। घर लौटो और देखो कि अब तुम्हारी पत्नी कनका का बरताव कैसा है।''

शंकर ने सन्यासी के पैरों को छुआ और घर लौटा। तब तक बहुत रात हो चुकी थी। शंकर को देखते ही कनका उसके पैरों पर गिरकर रोती हुई कहने लगी, ''मुझे माफ़ कर दीजिए। इतने दिनों तक मैं आपको सताती रही। जो नहीं कहना था, कहती रही। मेरे पाप का कोई प्रायश्चित नहीं।''

शंकर की खुशी का ठिकाना न रहा। जो भी हुआ, उसने अपनी पत्नी को बताया कि ''तुममें जो भी परिवर्तन हुआ है, उसका श्रेय उस सन्यासी को है। उन्हीं के वरदान के कारण तुम सुधर गयी हो।''

उसकी बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कनका ने कहा, ''अच्छा, बात यह है! कहते हैं कि देवता वरदान देते थे और अब सन्यासी यह काम करने लगे। समय कितना बदल गया। जो भी हो, वरदान आखिर वरदान ही तो है।'' फिर
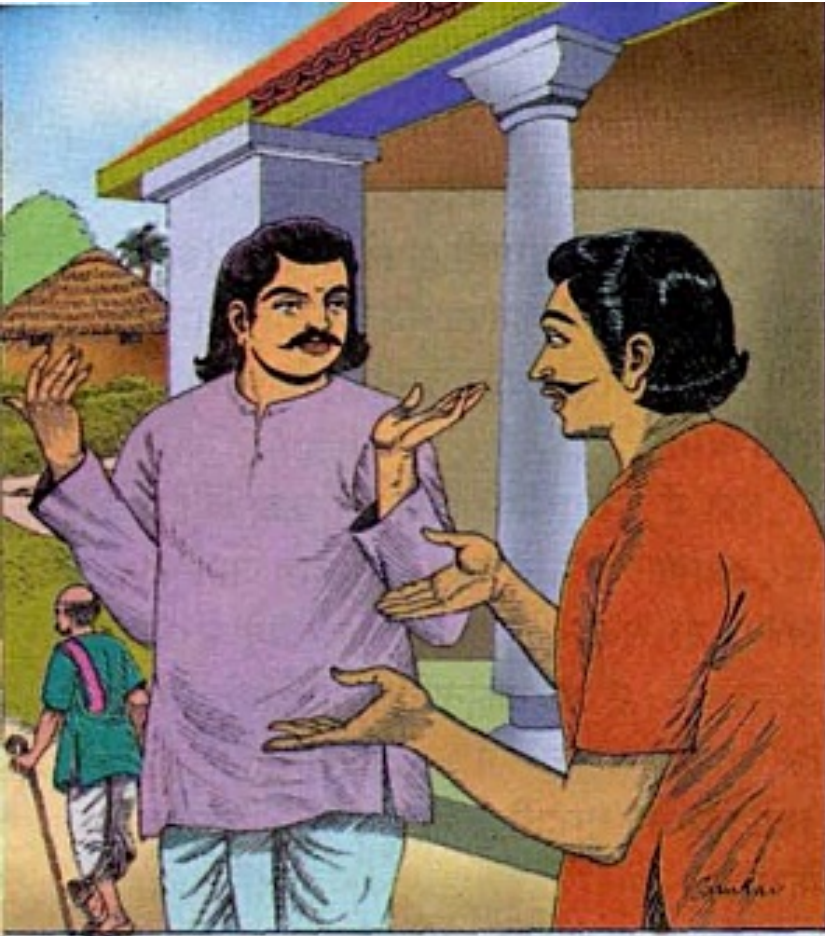
वह अपने हाथों को ध्यान से देखने लगी और कहने लगी, ''मेरे शरीर का रंग और निखरे और मेरा मोटापन कम हो जाए, ऐसा वर उस सन्यासी से माँगकर आइये।''

शंकर अपनी पत्नी की इच्छा पूरी करने दूसरे दिन सन्यासी से मिलने निकला। उसने सन्यासी से वह वर भी पा लिया और घर लौटा। अपनी पत्नी को देखते ही वह आश्चर्य में डूब गया। क्योंकि वह अब बहुत सुंदर लग रही थी। काफी युवती भी हो गयी।

उसने इसके दूसरे दिन शंकर से कहा, ''मुझे अच्छी रसोई बनाना नहीं आता। मेरी बनायी रसोई स्वादिष्ट नहीं होती। शायद किसी श्राप के कारण मेरे परिवार की सब स्त्रीयाँ इस विद्या से वंचित हैं। फिर सन्यासी से मिलो और ऐसा बरदान माँगों, जिससे मैं स्वादिष्ट रसोई बना सकूँ।''

शंकर इस छोटे से काम के लिए फिर से सन्यासी के पास जाना तो नहीं चाहता था, पर करे क्या? उसे लाचार होकर जाना ही पड़ा। आख़िर उसने यह बर भी सन्यासी से पा लिया।

एक सप्ताह के बाद कनका ने शंकर से कहा, ''मैं अब बहुत सुंदर लगती हूँ। स्वादिष्ट भोजन भी बना लेती हूँ। पर क्या फ़ायदा? हमारी ग़रीबी दूर नहीं हुई। जैसे थे, वैसे ही हैं। बिना धन-संपत्ति के इनका क्या प्रयोजन? आप एक और बार सन्यासी से मिलिए और धन-संपत्ति की याचना कीजिए।''

इस बार शंकर कुछ ज़्यादा ही चिढ़ता हुआ सन्यासी से मिलने जंगल गया। उसने वहाँ जाकर देखा कि सन्यासी उस टीले पर आसीन नहीं है। उसने इर्द-गिर्द बहुत ढूँढ़ा, किन्तु सन्यासी का कहीं पता नहीं चला। वह निराश होकर घर लौटा। गाँव के बीचों बीच स्थित भोजनालय के सामने आते ही एक आदमी ने पूछा, ''शंकर, अब खुश हो न? शंकर आराम से ज़िन्दगी कट रही है न?''

दाढ़ी और मूँछ के न होने के कारण वह सन्यासी को तुरंत पहचान नहीं पाया। जैसे ही उसने उसे पहचाना, उससे कहा, ''स्वामी, यह क्या? आपकी दाढ़ी, मूँछ और गेरुवे रंग के वस्त्रों का क्या हुआ?''

सन्यासी ने हंसते हुए कहा, ''मेरा नाम कालीपाद है। किसी विवेकी ने ठीक ही कहा कि बदसूरत पत्नी के साथ भी जी सकते हैं, पर चुड़ैल, कर्कश स्वभाव की पत्नी के साथ जीना संभव नहीं है। मेरी पत्नी में ये दोनों लक्षण हैं।

मुझसे यह सहा नहीं गया और मैंने सन्यास स्वीकार कर लिया। परंतु इन छः सालों की तपस्या के फलस्वरूप जो भी बात मेरे मुँह से निकली, वह सच निकली। इससे तुम्हारा पारिवारिक जीवन भी सुधर गया। यह देखते हुए मुझे लगा कि मैं अपने पारिवारिक जीवन को भी सुधार सकता हूँ। इसी विश्वास को लेकर मैंने उन गेरुवे वस्त्रों को त्यज दिया। अपने गाँव जाने निकला हूँ।''

सन्यासी की ये बातें सुनकर शंकर एकदम निराश हो गया। उसने कहा, ''स्वामी, छः सालों तक आप ध्यान-मग्न रहे। सिर्फ एक और दिन तक यह ध्यान चालू रखिए। इससे आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा। मेरी बड़ी उम्मीद थी कि आप हमें धन-संपदा की प्राप्ति का वर देंगे और हमें सुखी रखेंगे। यही वरदान पाने मैं आपसे मिलने जंगल भी गया था। वहीं से लौट रहा हूँ।''

उसकी बातों पर कालीपाद ने ज़ोर से हंसते हुए कहा, ''शंकर, बड़ों ने कहा है कि कष्ट का फल मीठा होता है। सुस्ती नामक पिशाचिनी को दूर भगाओ। मेहनत करो। जो काम तुमसे हो सकता है, करो। इसी में सुख है। फिर कभी किसी दिन मिलेंगे। मुझे निकलना है, क्योंकि मेरा गाँव यहाँ से बहुत दूर है।'' कहता हुआ वह वहाँ से निकल पड़ा।

कालीपाद के गाँव पहुँचते-पहुँचते बहुत रात हो गयी। बड़े ही उत्साह के साथ वह घर के पास आया। उस समय उसके घर की खिड़कियाँ खुली हुई थी। उसे अंदर से आती हुई आवाज़ें स्पष्ट सुनायी दे रही थीं। उसकी पत्नी बालामणि, दस साल की पुत्री व आठ साल का पुत्र आपस में बातें कर रहे थे।

''तुम्हारे दादा पर्याप्त संपत्ति छोड़कर चले गये, पर क्या लाभ। उनकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं रहा। तुम लोगों को अपने काबू में न रख सकने के कारण तुम दोनों ने शिक्षा भी नहीं पायी। छः सात सालों में तुम लोगों की शादी भी करनी है। क्या इतनी जिम्मेदारियाँ मैं संभाल सकूँगी? इतना भार मुझसे ढोया जा सकेगा? तुम्हारा पिता तो बड़ा ही कठोर निकला। हो सकता है, मैं मुँहफट हूँ, जो मुँह में आता है, बक देती हूँ। पर क्या ऐसी पत्नियों के सब पति सन्यासी बन जाते हैं? तब उन पत्नियों को क्या करना चाहिए, जिनके पति क्रोधी होते हैं। क्या उन्हें कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लेनी चाहिए? मुझे लगता है, मरण ही मेरे लिए शरण हैं'' यों बालामणि अपने बच्चों को अपना दुखड़ा सुना रही थी।

फिर धमाके की एक आवाज़ आयी। लगता था कि किसी ने अपना सिर फोड़ लिया। एक क्षण रुककर खुली खिड़की के पास कालीपाद आया और कहने लगा, ''बाला, मैं लौटकर आ गया हूँ। दरवाज़ा खोलो।'' फिर ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने लगा।

वेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा, ''राजन् शंकर बिना किसी विशेष प्रयास के अपनी पत्नी की कर्कशता व कठोरता को दूर करने में कामयाब हुआ और यों अपनी समस्या का परिष्कार कर पाया। किन्तु लगता है कि छः सालों तक ध्यान-मग्न कालीपाद को इस विषय में सफलता नहीं मिली। वह अपनी पत्नी की कर्कशता को दूर नहीं कर पाया। ऐसा क्यों हुआ? वैद्य जब रोगी की चिकित्सा करके उसके रोग को दूर कर सकता है तब उसी प्रकार के रोग से पीड़ित वैद्य अपना इलाज क्यों नहीं कर पाता? उस रोग से अपने को क्यों मुक्त नहीं कर पाता? क्या यह विचित्र बात नहीं? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, ''लगता है कि शुरुआत में सन्यासी कालीपाद को अपनी तपस्या पर उतना विश्वास नहीं रहा। पर जब उसने देखा कि उसकी बातों में महिमा है और उन्होंने शंकर पर अच्छा प्रभाव दिखाया तो वह घर लौटा। उसने सोचा कि उसकी बातें उसकी पत्नी पर भी अपना प्रभाव दिखायेंगी और वह अच्छी पत्नी बनेगी। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। उसकी पत्नी अपने बच्चों से कर्कश पत्नियों व क्रोधी पतियों के बारे में बता रही थी। उसे लगा कि इन बातों में सचाई है। इसीलिए उसने दरवाज़ा खटखटाकर पत्नी को बुलाया। पत्नी के विषय में वह असफल हो गया, क्योंकि तपस्या की शक्ति का उपयोग स्वार्थ के लिए करने की इच्छा उसमें जगी। उसका उपयोग असल में होना चाहिए, दूसरों के लिए। इसी में परमार्थ है।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : गायत्री देवी की रचना)

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झांकियाँ युग-युग में सत्य के लिए इसकी गैरवममी खोज

२१. प्रकृति में दैव दर्शन

संदीप व श्यामला उस दिन को कभी भुला नहीं सकते। दादा देवनाथ के साथ मिलकर वे शहर के पास ही के एक सुंदर स्थल को देखने गये। वहाँ एक सुंदर सरोवर भी था। छोटा-सा एक पहाड़ था, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था, मानों वह मनोहर चित्र हो। भाई-बहन के साथ उनके दोस्त भी आये थे। दिन भर वे सब उस प्रदेश में घूमते रहे और मज़ा लूटते रहे।

वातावरण बड़ा ही सुहावना था। पेड़ों की शाखाओं में विकसित रंग बिरंगे फूल प्रकृति की शोभा में चार चांद लगा रहे थे। सूरज सोने की गेंद की भाँति पश्चिमी पर्वत के पीछे छिप रहा था। उस प्रशांत गंभीर वातावरण में अस्त होते हुए सूर्य को देखकर श्यामला ने कहा, ''आहा, कैसा दिव्य दृश्य है।''

''वाह बेटी वाह, तुमने दिव्य शब्द का उपयोग करके कितना अच्छा किया। सही व सुंदर शब्द है वह। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति को दिव्य स्वरूप माना। वह हमारी संस्कृति का विशिष्ट अंश है। मनुष्य के मानसिक चैतन्य की परिधि को विस्तृत करनेवाला विशाल दृष्टिकोण है वह। इस दृष्टिकोण के कारण ही हमारे ऋषियों ने हिमालय को दिव्यात्मा के रूप में वर्णन किया। बरफ़ से भरे पर्वत श्रृंखलाओं के बीच में भी उन्होंने मंदिरों का निर्माण किया। हिमालय के शिखरों में स्थित कैलासगिरि को परमशिव का निवास स्थल माना और उसकी भरपूर प्रशांसा की'' देवनाथ ने कहा।

''भक्त तरह-तरह की तक़लीफों को सहते हुए

विश्वावसु

भी ऐसे मंदिरों का दर्शन करने यात्रा करते हैं। ऐसे यात्रियों पर छिपकर आक्रमण करना और उन्हें मार डालना कितना घोर पाप है, कितना दारुण कृत्य है। पिछले जुलाई में अमरनाथ की यात्रा पर गये यात्रियों पर ऐसा ही अत्याचार हुआ, उन्हें ऐसी ही दुर्घटना का शिकार होना पड़ा।'' संदीप के मित्र ने दुख प्रकट करते हुए कहा।

''मनुष्यों के बीच में विष सर्प जैसे दुष्ट भी होते हैं। भविष्य ही जानता है कि ऐसे दुष्टों का अंत कब होगा, उनकी ये कुत्सित चेष्टाएँ कब तक होती रहेंगी? भगवान ही जानता है कि ऐसे लोगों का उत्थान कब होगा, कब वे अपनी आत्मा को पहचान पायेंगे और अपने को सुधारेंगे।'' लंबी सांस खींचते हुए विषाद-भरे स्वर में दादा देवनाथ ने कहा।

''अमरनाथ मंदिर, कैसा मंदिर है? उस मंदिर के भगवान का क्या नाम है दादाजी?'', संदीप ने पूछा।

''प्रकृति के प्रति प्रदर्शित किये जानेवाले मानव के भक्ति भाव का परिपूर्ण उदाहरण है, अमरनाथ मंदिर।'' और जानने के लिए उत्सुक बच्चों को देखते हुए देवनाथ ने अमरनाथ मंदिर के बारे में आगे यों कहा।

बरफ़ से भरे पर्वतों के बीच यह मंदिर स्थित है। समुद्र के तट से लगभग ४०० मीटरों की ऊँचाई पर यह मंदिर है। हज़ारों सालों से यह सुप्रसिद्ध है। किंतु एक समय था, जब वह कालगर्भ में आँखों से ओझल हो गया। एक चरवाहा खोयी हुई अपनी एक बकरी को ढूँढ़ते हुए गया। उसने अचानक एक विचित्र गुफ़ा देखी और उसमें एक शिवलिंग को देखा, जो संपूर्ण रूप से बरफ़ से ढ़का हुआ था। चंद्रमा की वृद्धि व क्षय के अनुरूप यह लिंग बढ़ता और घटता रहता है।

चरवाहे ने जो शिवलिंग देखा, उसके बारे में कश्मीर के राजा को सविस्तार बताया। आस्थान के पंडितों को ज्ञात था कि ऐसी एक गुफ़ा है, पर उन्हें यह मालूम नहीं था कि वह गुफ़ा कहाँ है और वहाँ कैसे पहुँच सकते हैं। कितनी ही पीढ़ियों से किसी ने भी वह गुफ़ा देखी ही नहीं। किन्तु पंडित उस मंदिर से संबंधित पौराणिक गाथाओं से अवगत थे।

बहुत पहले की बात है। परमशिव अपने गले में कपालमाला पहनते हैं। उनकी धर्मपत्नी पार्वती यह जानने को बहुत उत्सुक थीं कि वे क्यों यह माला पहनते हैं। परमशिव ने उनके इस प्रश्न पर मंदहास करते हुए कहा, ''यह तुम्हारे पूर्व जन्म से संबंधित कपाल हैं। जब-जब तुम मर जाती हो, तब-तब इन कपालों को मालाओं के रूप में गले में धारण करता रहता हूँ।''

''मैंने इतने जन्म लिये, परंतु आप क्यों जन्म-मरण से मुक्त हैं?'', पार्वती ने पूछा।

''यह दिव्य अमरत्व का रहस्य है। मैं तुम्हें

उसकी कथा बताऊँगा। जब तुम यह जान जाओगी तो तुम्हें मृत्यु से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। किन्तु जो रहस्य तुम्हें बताने जा रहा हूँ, तुम अकेली को ही सुनना होगा। इर्द-गिर्द किसी भी प्राणी को रहना नहीं चाहिए'', शिव ने शर्त रखी।

उन्होंने ऐसे स्थल के लिए बहुत ढूँढ़ा और आख़िर एक गुफ़ा पायी। शिव पार्वती दोनों गुफ़ा में पहुँचे। शिव ने पार्वती को बग़ल में बिठाया और उन्हें अमरत्व के रहस्य को सुनाने लगे। सुनते-सुनते पार्वती निद्रा की गोद में चली गयीं। शिव लगातार एकाग्रचित्त होकर उस रहस्य का विवरण देते गये। उन्होंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया कि पार्वती निद्रावस्था में है। किन्तु थोड़ी देर बाद उन्हें लगा कि पार्वती के बदले कोई और सुन रहा है और हाँ, हाँ कहता जा रहा है, तो उन्होंने मुड़कर देखा। तभी देखते-देखते अंडे से फूटा तोते का बच्चा गुफ़ा से बाहर उड़ गया। वह तोता ही तदुपरांत व्यास महर्षि का पुत्र होकर जन्मा, जिसका नाम है शुकदेव।

यही वह पुण्यस्थल अमरनाथ मंदिर है, जहाँ शिव ने पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था।

अब आगे की कहानी सुनो। चरवाहे के दिखाये मार्ग से होते हुए राजपरिवार गुफ़ा के पास पहुँचा। और हज़ार सालों के पहले यह घटना घटी।

तब से लेकर हर साल हज़ारों की संख्या में भक्त यहाँ आते रहते हैं, प्रकृति में सहज ही व्यवस्थित इस देव मंदिर का वे दर्शन करते हैं।

भक्त इस पवित्र मंदिर का दर्शन करने किसी एक शुभ दिन पर निकल पड़ते हैं। पहलगांव से होते हुए दौद गंगा जैसी नदियों की प्राकृतिक छटा को निहारते हुए अपने गम्यस्थल की ओर बढ़ते हैं। कह सकते हैं कि वे प्रकृति का एक अंश बन जाते हैं। उसकी सहज सुंदरता को देखकर खो जाते हैं। यह अपने में एक अद्भुत, बिलक्षण अनुभव है। गुफ़ा के अंदर दिव्य व अद्भुत शोभाओं को व्याप्त करनेवाले बरफ के लिंग का दर्शन करते हैं। इसके साथ यात्रा की समाप्ति हो जाती है और वे महसूस करने लगते हैं कि मानों उनका जन्म सार्थक व सफल हुआ हो। फिर वे इस दिव्य अनुभूति के साथ लौटते हैं।'' देवनाथ ने कहा। *- क्रमशः*

गुजरात की एक लोक कथा

गुजरात : तब और अब

'गूजर राष्ट्र' से गुजरात जाना गया। पाँचवीं शताब्दी के (ऐ.डी.) हून्स के आक्रमण के बाद, जान बचा के भागनेवाली गूजर जाति भारत में आकर बस गई।

वैसे गुजरात का इतिहास इससे भी प्राचीन है! २००० बी.सी. से इसका उल्लेख है। हणप्पन सभ्यता के चिन्ह, रन ऑफ कच्छ में पाये गये हैं। ऐसा भी विश्वास है कि भगवान कृष्ण मथुरा छोड़ने के पश्चात् पश्चिमी तट पर सौराष्ट्र और द्वारका में आकर बस गये थे।

बम्बई ''राज्य पुनः निर्माण के १९६० के कानून के बाद गुजरात का निर्माण हुआ। राज्य के पश्चिम में अरब सागर है, उत्तर में पाकिस्तान और उत्तर पूर्व में राजस्थान है। दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश और दक्षिण में महाराष्ट्र है।

राज्य का पूरा भाग १९६०००, वर्ग किलोमीटर है ये सम्पूर्ण भारत के क्षेत्रफल का ६.१९६ प्रतिशत है। सन् २००१ की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ५०,५९६,९९२ जनसंख्या के अनुसार गुजरात का भारत के राज्यों में दसवाँ स्थान है, और क्षेत्रफल के अनुसार यह नवे स्थान पर है।

एक लड़के ने बुद्धि बेची

एक समय, गुजरात के एक राज्य में एक छोटा लड़का रहता था। उसका नाम विपुल था। जब वह बहुत छोटा था, उसके पिता की मृत्यु हो गई। उसके पिता ने उसके जीविका उपर्जित का कोई साधन नहीं छोड़ा। परन्तु इस लड़के ने अपने पिता को व्यवसाय करते हुए देखा था। पिता की क्रियाओं से उसने बहुत कुछ सीख लिया था। एक दिन उसे अद्वितीय विचार आया।

विपुल ने कुछ रुपये उधार लिये और बाज़ार में एक छोटी-सी दुकान खोल ली। उसने मेज़ पर

हस्तकला

गुजरात अपने रंग-बिरंगे और तरह-तरह के हस्तकारी के लिए जाना जाता है। जिसमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, *बाँधनी* या *बन्धेजी* के कपड़े। गुजरात कपड़ों की गुणवत्ता के लिए भी प्रसिद्ध है। जिसमें पटोला के कपड़ों पर आड़ी-तिरछी नक्काशी, सूरत का *ज़री* वाला काम, और *मशरू* अपने भाँति-भाँति की डिजाईन के लिए जाने जाते हैं।

इस राज्य में सुन्दर और सबसे मुश्किल कढ़ाई का कार्य होता है। कपड़ों पर *चलक, सलेईया, काँगरी, टिकी* और *कटोरी* जैसी कढ़ाई कीजाती है। कच्छ का क्षेत्र अपने शीशे के कार्य के लिए मशहूर है। जो साड़ियों पर तथा अन्य कपड़ों पर किए जाते हैं। जो गुजराती कढ़ाई के नाम से पूरे देश में ही नहीं विश्व में भी प्रसिद्ध है। यहाँ के धागों के रंगों का मेल काफी चटकीला और आकर्षक होता है।

सादे कागज़, कलम और दवात रख दी। फिर उसने 'बुद्धि की बिक्री' का एक बोर्ड लगा दिया।

उसके आसपास के व्यापारी अपनी-अपनी वस्तुएँ की आवाज़ें लगाकर बेचते थे। दुकानों में हर प्रकार की वस्तुएँ होती थीं। कुछ दुकानों में 'बन्धेज', 'ज़री', और पटोलावाले महँगे कपड़े भी रखे हुए थे। कुछ दुकानों में लाख के खिलौने, पालने, कुर्सियाँ और मेज़ें बेची जाती थी। पास ही में सबसे प्रसिद्ध दुकान थी, 'भोजनालय'। यहाँ खमाम, ढ़ोकला, पथारा, खाँडवी, तले हुए फरसाण बेचे जाते थे। मिठाईयों में, गरम जलेबी, दूधपॉक और श्रीखंड बेची जाती थी।

यहाँ हर प्रकार की वस्तुएँ थी। साग भाजी, अनाज, इत्र, मिठाईयाँ और रसोई का सामान इत्यादि। इन वस्तुओं को आप उठाकर देख सकते थे, उन्हें छू सकते थे, स्वाद चख सकते थे, सूँघ सकते थे। परन्तु ये कौन अद्भुत प्राणी था जो बुद्धि बेच रहा था। लोगों ने उसे पागल और बुद्धिहीन समझा और उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, लेकिन विपुल ने साहस नहीं छोड़ा। वह अपनी दुकान पर बैठकर आवाज़ लगाता था, 'यहाँ बुद्धि बेची जाती है।'

एक अमीर आदमी का लड़का, बुद्धूनाथ वहाँ से गुज़रा। अपनी बुद्धिहीनता के कारण उसे सदैव अपने पिता से ताड़ना मिलती रहती थी। विपुल की दुकान के सामने खड़े होकर वह सोचने लगा। उसने पूछा, "सूँ छे" (क्या है?)। विपुल ने उत्तर दिया, "बुद्धि"। बुद्धूनाथ ने सोचा कि अपने पिता को प्रसन्न करने का यह एक अच्छा साधन है। उसने विपुल से पूछा, "एक गज़ बुद्धि का अथवा जिस प्रकार भी वह बेची जाती है, क्या मूल्य है।"

विपुल ने उसे बताया कि बुद्धि गज़ के माप से नहीं, परन्तु उत्तमता के हिसाब से बेची जाती है। जैसे कि आधुनिक सलाहकार बेचते हैं बुद्धूनाथ को किसी बात ज्ञान था ही नहीं, उसने "हम

खरीदीश (मैं खरीदूँगा) मुझे एक रुपए की बुद्धि दो।''

विपुल ने साफ कागज़ उठाया और उस पर लिखा, ''दो आदमियों की लड़ाई को वहाँ खड़े होकर मत देखो'' और वह कागज़ उसे थमा दिया।

बुद्धूनाथ बोला, ''खूब आभार'', और खुशी-खुशी उस कागज़ को अपनी पारम्परिक पगड़ी में खोंस लिया। अपनी खरीदी पर खुश होकर वह वहाँ से चल पड़ा।

जब वह घर पहुँचा तो उसका पिता बहुत अप्रसन्न हुआ, ''तुम्हारी बुद्धिहीनता की कोई सीमा नहीं है'' वह बेटे पर बरसा। ''किसी नालायक ने तुम्हें बुद्धि बेची और तुमने ख़रीद ली, क्या तुम नहीं जानते कि बुद्धि खरीदी नहीं जा सकती!'' उन दिनों सलाहकारों के विषय में लोग अनभिज्ञ थे।

पिता उसे घसीटता हुआ बाज़ार ले गया और विपुल की दुकान दिखाने को कहा। वह विपुल की दुकान पर जाकर चीख़ा, ''तुमने मेरे बेटे की बुद्धिहीनता का लाभ उठाया है। मैं तुझे राजा के दरबार में ले जाकर लोगों को ठगने के अपराध में दंड दिलवाऊँगा, बदमाश!''

''आपको इतना क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं है। अगर आपको मेरी वस्तु की उत्तमता पर विश्वास नहीं है, तो उसे लौटा दीजिए और अपना रुपया वापस ले लीजिए।''

रईस आदमी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। अपने बेटे की बुद्धिहीनता का इतने सरल हल होने की उसे आशा नहीं थी।

''यह लो अपनी बुद्धि'' कहकर, पिता ने कागज़ उसकी मेज़ पर फेंक दिया।

''ना, ना! यह कागज़ बुद्धि नहीं था, जिसे मैंने बेचा था। इसका विचार महत्वपूर्ण है। आपके बेटे को यह वादा करना होगा कि मेरी दी हुई बुद्धि को वह उपयोग में न लाये। लोगों को लड़ते हुए देखकर इसे वहाँ खड़े होकर उस लड़ाई को देखना पड़ेगा।''

मेले और त्यौहार

गुजरात अपने त्यौहारों और मेलों के लिए भी प्रसिद्ध है। सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार जो १४ जनवरी को प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है, वह पतंग त्यौहार। यह मकर संक्रांति का दिन होता है। पूरे विश्व से लोग यहाँ जमा होकर इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण मेला है, त्रिनेत्रेश्वर महादेव मेला। यह माना जाता है कि तारनेतर में ही महाभारत युग में द्रौपदी का स्वयंवर हुआ था।

राजस्थान के पुश्कर पशु मेले की भाँति यहाँ के वायुथा तथा साबरमती नदी और वातरक नदी के किनारे एक पशु मेला लगता है। यहाँ पर गधों की खरीदारी और बिक्री होती है।

पिता के वादे के अनुसार, वह दोनों औरतों का झगड़ा खड़ा होकर देखने लगा। कुछ ही समय में वह दोनों एक दूसरे से हाथापाई करने लगीं, नोंचने खसोटने लगीं। बुद्धूनाथ को वहाँ खड़ा देखकर, ''तुम मेरे गवाह हो। इसने ही यह लड़ाई आरम्भ की। दूसरी बोली, ''तुम्हें मेरा गवाह बनना पड़ेगा। पहले इसने मुझ पर हमला किया, मेरे बाल खींचे।''

फिर उन दोनों को याद आया कि उनके सर पर बहुत काम पड़ा था। वह दोनों महल में वापस आ गईं। द्वार पर लगे तोरन से टकराते हुए वह दोनों, क्रोध से भरी हुई, अपनी-अपनी रानियों के कक्ष में चली गईं।

उन्होंने अपनी-अपनी रानियों से एक दूसरी की बढ़ा चढ़ाकर शिकायत की। और बुद्धूनाथ को गवाह ठहराया दोनों रानियाँ, भड़कीले घाघरे पहने और चमचमाते हुए जेवर लादे हुए राजा के पास पहुँची और उनसे शिकायत की कि उनकी दासी के साथ दूसरी की दासी ने धृष्टता का व्यवहार किया। दोनों ने बुद्धूनाथ को गवाह ठहराया। इस झगड़े का निपटारा करने के लिए राजा ने बुद्धूनाथ को बुला भेजा।

बुद्धूनाथ असमंजस में था। वह जानता था कि वह जो भी कहेगा, उसे मुसीबत में डाल देगा। उसके पिता के पास भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं था। उसने बुद्धूनाथ को झगड़े की

भीड़ जो वहाँ जमा हो गई थी, वह विपुल की बात से सहमत थी। लड़के के पिता ने वादा किया कि उसका बेटा विपुल की दी हुई बुद्धि को उपयोग में नहीं लाएगा और विपुल से उसके बेटे का दिया हुआ चाँदी का रुपया वापस ले लिया।

उस राज्य के राजा की दो पत्नियाँ थीं, रूपमती और तारामती। ये दोनों आपस में सदैव झगड़ती रहती थीं। दोनों की एक-एक दासी थीं। दासियाँ भी आपस में झगड़ती रहती थीं और अवसर मिलते ही एक दूसरे से मार-पीट भी करती थीं।

एक दिन बुद्धूनाथ बाज़ार में घूम रहा था। दोनों दासियाँ भी बाज़ार में आईं। दोनों एक ही तरकारी की दुकान पर गईं। दोनों ने एक ही समय, एक कासीफल को पसंद किया। वह दोनों उस एक ही कासीफल को खरीदना चाहती तीं। तरकारी बेचनेवाले के समझाने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

दोनों दासियाँ एक दूसरे पर चीखने लगीं। बुद्धूनाथ था तो बुद्धू परन्तु ईमानदार था। अपने

जगह खड़े होने के लिए डाँटा। बुद्धूनाथ अपने पिता को उनका विपुल को दिया हुआ वादा याद दिलाया, परन्तु उन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब और कोई चारा न रहा तो वह विपुल के पास इस समस्या को सुलझाने की बुद्धि लेने गया। विपुल ने कहा कि उसके पास हल है परन्तु उसे अधिक पैसा देना पड़ेगा।

''पाँच सौ ! मैं पाँच सौ चाँदी के रुपये लूँगा।'' दूसरा कोई रास्ता न देखकर, वह

अमीर आदमी मान गया। विपुल ने बुद्धूनाथ से पागल होने का ढोंग करने को कहा, राजा जब बुद्धूनाथ की ऊलजलूल बातें न समझ सकेगा तो उसे जाने देगा। रानियाँ उस पर क्रोधित नहीं होंगी।

रईस आदमी ने विपुल को पाँच सौ रुपये दे दिये और उसकी सलाह को उपयोग में लाये। लेकिन पिता पुत्र के सामने दूसरी समस्या खड़ी हो गई, जिसका उन्हें आभास भी नहीं था। अमीर आदमी ने सोचा कि यदि राजा को यह मालूम पड़ गया कि बुद्धूनाथ वास्तव में पागल नहीं है तो एक नई समस्या खड़ी हो गाएगी। वह दोनों वापस विपुल के पास गये और शिकायत की कि उसकी दी हुई बुद्धि पर्याप्त नहीं थी।

विपुल ने जवाब दिया, ''मैंने आपको सही सलाह दी है। अब और पाँच सौ रुपयों के लिए मैं आपको दूसरी सलाह दे सकता हूँ।''

अमीर आदमी ने उसे और पाँच सौ रुपये दे दिये। विपुल ने कहा, ''जब राजा प्रसन्न हो तो वे उसे एक कहानी सुनाये तब वह हसेंगे और उन्हें क्षमा कर देंगे। परन्तु ध्यान रहे राजा खुश होना चाहिए'', विपुल ने उन्हें समझाया।

अमीर आदमी, और बुद्धूनाथ ने वही किया, जो विपुल ने उनसे कहा था। लेकिन राजा उस नौजवान से मिलने के लिए उत्सुक हो उठा जो बुद्धि बेचता था और उसे बुला भेजा। विपुल राजा के सामने उपस्थित हुआ। राजा बोले, ''सुना है तुम बुद्धि बेचते हो, तुम मुझे क्या बेचोगे?''

''महाराज ! मेरी बुद्धि बहुत महँगी है'' विपुल ने राजा को चेतावनी दी।

''कोई बात नहीं। उसकी क्या कीमत होगी?'', राजा ने पूछा।

पाँच हज़ार, आपको बुद्धि पाँच हज़ार में बेचूँगा'' विपुल ने साहस से कहा।

''मुझे कीमत पर आपत्ति नहीं है, अगर वह बुद्धि उस लायक हुई तो,'' राजा ने जवाब दिया।

विपुल ने अपनी सलाह कागज़ पर लिखी और वह कागज़ राजा को दे दिया। ''कुछ भी करने से

पहले उस पर गहरा विचार कीजिए'' कागज़ पर लिखा था। राज्ञा को यह सलाह बहुत अच्छी लगी। उन्होंने यह सलाह, महल की हर जगह पर लिखवा दी। सुन्दर अंजार पेन्टिंग के बगल में, पारम्परिक कढ़े हुए हाथ के पंखों पर, जो महल सभी लोग प्रयोग में लाते थे। मिट्टी रंगीले मिट्टी के सामान पर। राजा ने विपुल को पाँच हज़ार रुपये दे दिये।

इस घटना के थोड़े दिन के बाद राजा अस्वस्थ हो गये। रानी रूपमती और मंत्रियों ने राजा को मार डालने की योजना बनाई। उन्होंने वैद्यों को घूस देकर राजा की औषधि में विष मिलाने के लिए राज़ी कर लिया। राजा औषधि पीने ही वाले थे कि उनकी निगाह दीवार पर लिखी हुई सलाह पर पड़ी। ''कुछ भी करने से पहले उस पर गहरा विचार कीजिए।'' उनको वह सलाह और अधिक भा गई। औषधि पीने की जगह वह उसे निहारते रहे।

वैद्य को उसके अन्दर का चोर खाये जा रहा था। राजा को गहरी सोच में देखकर वह चौंक गया। उसे विश्वास हो गया कि राजा को औषधि पर संदेह हो गया है। उसने सोचा कि पकड़े जाने से पहले अपना दोष मान लेना ज्यादा अच्छा होगा। वह राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला, ''मॉफ करो, राजा साहेब।''

राजा पहले तो चकित हुआ, परन्तु जब उसे वास्तविकता का पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने रानी और मंत्रियों को बुलाकर देश निकाला दे दिया।

राजा ने विपुल को बुला भेजा। उसे अपना मंत्री बना लिया। विपुल की सलाहों की सहायता से उसने बरसों तक उचित रूप और बुद्धिमता से शासन किया।

पुनः प्रस्तुति - उमा रामन.

(मूल गुजराती कहानी -ए.के. रामानुजम)

स्रोत - भारत की लोक कथाएँ

पर्यटन स्थल

यदि आप गुजरात जा रहे हैं तो द्वारका जाना न भूलें। जहाँ भगवान कृष्ण का निवास स्थान और राज्य था। वर्तमान समय में स्थित द्वारका छटवाँ द्वारका शहर है। क्योंकि इससे पूर्व पाँच पुरानी द्वारका समुद्र में समाहित हो चुकी है। ऐसा माना जाता है। द्वारकाधीश का मंदिर २,५०० वर्ष पुराना माना जाता है।

कच्छ में स्थित लोपल हड़प्पा सभ्यता का नमूना है। हणप्पन और लोथल जैसे क्षेत्र यहाँ के ही नहीं बल्कि पूरे देश में सबसे पुराने क्षेत्र हैं।

कथकली

भारतीय नृत्य

देवी देवता, राक्षस राक्षसियाँ, बड़ी स्फूर्ति से घूमते फिरते हैं। मंच पर अंधेरा है। सिर्फ एक ऊँचे पीतल के दीपदान से रोशनी फैल रही है। कलाकार चमकदार वेष-भूषा से सुस्सज्जित हैं।

कथकली नृत्य के कार्यक्रम में आपका स्वागत है। इसका जन्म दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में हुआ है। कथकली का भावार्थ है ''कथा वर्णन'' ये अतिउत्तम नृत्य नाटक है। यह बहुत रंगीला और नाटकीय नृत्य है। यह ३०० साल पुराना नृत्य, नृत्य, नाटक और फौजी कला का मिश्रण है। इसके बहुत से अंग और ढंग, ९वीं शताब्दी की केरल की ''कूडियाट्टम'' कला से प्रभावित हैं। यूनिस्को से इसे प्राचीन कला नृत्य की मान्यता मिली है।

अधिकतर इसमें कलाकार महाकाव्य और पौराणिक कथाओं के दृश्य दर्शाते हैं।

आश्चर्य की बात ये है कि इस नृत्य-नाटक में कलाकार एक शब्द भी नहीं बोलते हैं। इनका एक संघ कथा का गायकी के रूप में वर्णन करता है, जिसका कलाकार नृत्य के रूप में भावार्थ करते हैं, मुद्राओं, मुख और आँखों द्वारा इसकी ७०० मुद्राओं को २४ प्रकार के रूपों में दर्शाया जाता है। अच्छे नृत्यकार अपनी आँख की पुतली को १७ प्रकार से घुमा सकते हैं। आठ प्रकार से भौहों और पलकों को घुमा फिरा सकते हैं।

अभी तक केवल पुरुष ही ये नृत्य करते थे। महिलाओं की भूमिका भी पुरुष कितनी चपलता और सुन्दरता से करते हैं, ये देखकर आपको आश्चर्य होगा।

मुखाकृति की रंग सज्जा

मुख की रंगा सज्जा में होठ, भौहें, पलकों को प्रमुखता दी जाती है। नायक, खलनायक, राक्षस, महात्मा, राजा और महिलाओं और हर अन्य कलाकारों की रंग सज्जा और वेष भूषा निर्धारित होती है। रंगदार रंग सज्जा करने में बहुत

समय लगता है, लगभग चार से पाँच घन्टे। हरा रंग अच्छाई का प्रतीक है, लाल बहादुरी और क्रूरता का, काला दुष्टता और असभ्यता का, पीला आश्चर्य का और सफेद पवित्रता का। इन रंगों का मिश्रण कलाकार का भाव और लक्षण दर्शाता है।

नर्तक की आँखों का काजल लम्बा किया जाता है ''चुन्डपू'' फूल के कुछ बीज आँख में डाल दिये जाते हैं। दीप की ज्योति में आँखें लाल लाल चमकती हैं। बहुत ही अद्‌भुत दिखाई देती हैं।

रंग सज्जा से पहले कलाकार अपना मुँह अच्छी तरह धो लेता है। उसके बाद उसके माथे पर चंदन का पवित्र टीका लगा दिया जाता है। फिर कलाकार लेट जाता है, जिससे रंग सज्जा कलाकार को उसका चेहरा रंगने में सुविधा हो।

यह नृत्य-नाटक पारम्परिक रीत से मंदिरों के खुले चबूतरों पर किया जाता है। यह देर रात से शुरु होकर सुबह खत्म होता है। कवि वल्लाथोल नारायण ने केरल कला मण्डलम का निर्माण करके कथक्कली को फिर से जीवित किया। आजकल यह थियेटरों में किया जाता है, संध्या के समय बाइबिल की कथाओं (जैसे मेरी ऑफ मगडालिनी) भी इसमें दर्शाई जाती हैं।
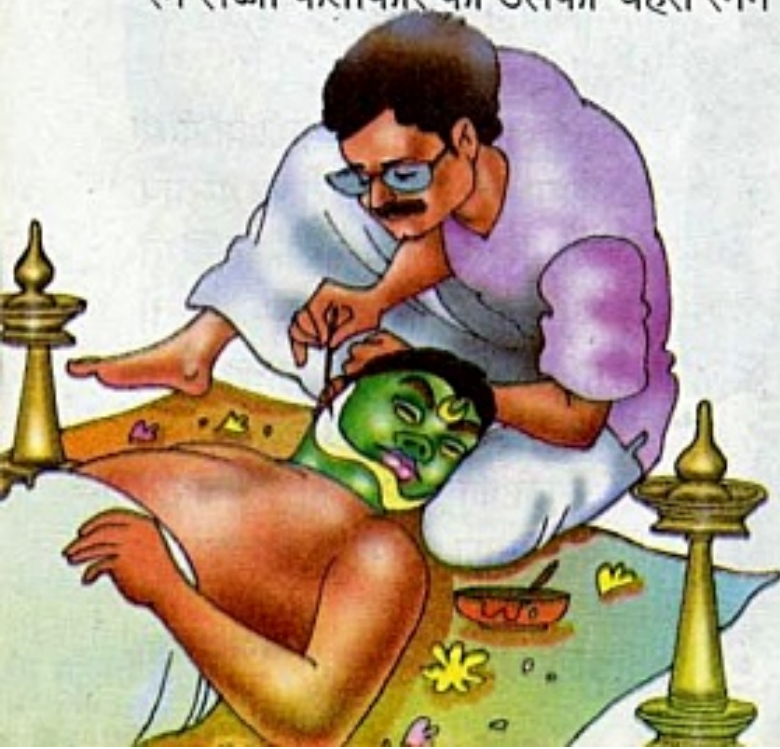
कथक्कली के कलाकारों का चेहरा प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है। आपको आश्चर्य हो रहा है कि हरा, पीला, लाल, सफेद रंग कहाँ से लाये जाते हैं? जी हाँ प्राकृतिक उपजों से! इस्तेमाल से पहले इन्हें पीसकर नारियल के तेल में मिलाया जाता है।

सफेद चूने से मिलता है। लाल रंग में चूना और हल्दी का मिश्रण होता है। हरी पत्तियों को पीसकर उनमें चूना मिलाकर हरा रंग तैयार किया जाता है।

नारियल के कड़े भाग को जलाकर, उसमें नारियल का तेल मिलाकर काला रंग तैयार किया जाता है।

हल्दी से पीला रंग तैयार होता है।

बिन माँग की सलाह

इस्लामं के सूफ़ी संतों के बारे में आपने सुना होगा। सूफ़ीयिसम् इस्लामिक परम्परा है।

सूफ़ी संत, सज्जनता की राहें, दुनियाबी भाईचारे के उपदेशों के लिए जाने जाते हैं। लेकिन जीवन में किसने आलोचना नहीं सही। सूफ़ी भी इससे वंचित नहीं थे।

एक गाँव में एक नौजवान रहता था जो हमेशा सूफ़ी संतों के खिलाफ़ बोलता था। सब लोग इस अहंकारी दुराचारी से तंग आ चुके थे। लेकिन उसे लम्बे विवादों अपने विवादों को व्यक्त करने में बड़ा आनन्द आनन्द आता था। इससे जूझने का किसी में साहस नहीं था।

आखिर में एक सूफ़ी सन्त ने, जो उसी गाँव में रहता था, उसके विचारों का खंडन करके उसे सबक सिखाने का फैसला किया। सूफ़ी ने अपनी उँगली से उतारकर एक अँगूठी उसे दी और कहा, ''नौजवान को बाजार जाकर इसे ५०० रु. में बेच आओ.'' नौजवान इस काम को करने कर पूरा भरोसा था और वह बाजार की तरफ़ दौड़ पड़ा।

लेकिन उसे अँगूठी का कोई खरीददार नहीं मिला। हाथों में उलट-पलट कर बड़े शक से एक औरत ने कहा, ''नौजवान मैं इस अँगूठी के तुम्हें १०रु. दे सकती हूँ, वो भी इसलिए कि मेरा बच्चा इसे माँग रहा है।'' नौजवान वापस सूफ़ी के पास पहुँचा।

अब की बार संत ने उसे एक जौहरी के पास भेजा ये मालूम करने के लिए कि वह अँगूठी कितने में बिक सकती है। जौहरी ने अँगूठी को तोला, उसकी जाँच की, और नौजवान को ५००० रु. देने को राजी हो गया।

वह फिर वापस सूफ़ी के पास आया और उसे जौहरी का प्रस्ताव बताया। सूफ़ी ने हल्के से हँसते हुए कहा, ''बेटे तुम्हें सूफ़ी सन्तों के बारे में उतनी ही जानकारी है जितनी बाजार में उस औरत की अँगूठी की कीमत की'' नौजवान को उसका सबक मिल गया।

चन्दामामा

भारतीय त्यौहार

दशहरा
विजय का उत्सव

रंगों, शानो-शौकत और आनन्द से भरपूर दशहरे के उत्सव को शायद ही कोई दूसरा भारतीय उत्सव भाव दे सकता है। हिन्दू तिथिपत्र के अनुसार दशहरा अश्विन मास यानी सितम्बर-अक्टूबर में मनाया जाता है। दशहरा, दुगदिवी का राक्षस महिषासुर के दमन करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

पुराण-कथा के अनुसार महिषासुर को भगवान शिव से यह वरदान मिला हुआ था कि कोई भी देवता उसे मार नहीं सकता था। इस वरदान की शक्ति से उसने निर्दोषों को मारना शुरु कर दिया। तब देवताओं ने सर्वशक्तिमान दुर्गा देवी का निर्माण किया।

दैवी शक्ति से भरपूर, और विशेष शस्त्रों द्वारा जो उन्हें ईश्वरों से प्राप्त हुए, दुर्गा ने महिषासुर को ललकारा।

दोनों में घमासान युद्ध हुआ और अन्त में दुर्गा ने महिषासुर का वध किया।

देश के कुछ भागों में दशहरे का उत्सव नौ दिन तक मनाया जाता है। ये महालया अमावस के शुभ दिन शुरु होता है। इस उत्सव को नवरात्री कहते हैं (नौ रातें)। ये उत्सव दसवें दिन खत्म होता है। इस दिन को विजय दशमी कहते हैं। ये बड़ा शुभ दिन माना जाता है और इस दिन नये-नये कार्य शुरु किये जाते हैं।

देश के कुछ भागों में दसवाँ दिन भी उत्सव का दिन होता है। ये दस दिन का उत्सव हो जाता है। इसलिए इसे दशहरा कहते हैं।

पश्चिम बंगाल में "दुर्गा पूजा"

क्या आपकी माताजी अक्सर छुट्टियों में अपने माता पिता के घर नहीं जातीं। बंगालियों का विश्वास है कि दुर्गा माँ, अपने परिवार के साथ, हर साल हिमालय में अपने घर जाती हैं। दुर्गा का ये वार्षिक मिलन दुर्गा पूजा के नाम से मनाया जाता है।

सारे प्रान्त में रंग-बिरंगे और सजे हुए पंडालों में, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश और कार्तिक की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं। दुर्गा भयानक शेर पर बैठी होती हैं और इनके चरणों में महिषासुर का शव होता है। ये बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

पूजा सातवें दिन (महासप्तमी) के दिन आरम्भ होती है और आठवें दिन (महाअष्टमी) शिखर पर पहुँचती है। पूजा के समय ढोल और मंजीरे बजाये जाते हैं।

विजय दशमी के दिन, सजी हुई गाड़ियों में, लम्बे रंग बिरंगे जुलूस में बाजे गाजे के साथ, बड़ी धूमधाम से विसर्जन के लिए ले जाया जाता है।

बंगाल की महिलाएँ, माँ दुर्गा को पारम्पारिक ढंग से (सिन्दूर-खेला) विदा करती हैं।

पास पड़ोस की महिलाएँ, विजयदशमी के दिन, पंडालों में जमा होती हैं, मूर्ति के माथे पर सिन्दूर लगाती हैं, मुँह में मिठाई रखती हैं, और हाथ में पान रखकर अगले वर्ष तक के लिए विदा करती हैं। मंगल कामना करती हुई एक दूसरे को सिन्दूर लगाती हैं।

मैसूर में दशहरा

वार्षिक दशहरा उत्सव के लिए मैसूर प्रसिद्ध

है। चौदहवीं सदी में, विजयनगर साम्राज्य के हम्पी शहर में, कृष्णादेवरय्या की सत्ता में ये उत्सव मनाया जाता था।

विजयनगर के अन्तिम शासक ने इसका भार मैसूर में मुम्मदी कृष्णराज वोडियार को सौंप दिया। अंग्रेज़ी शासन से पहले, वोडियार की सत्ता में, ये बहुत बड़ा उत्सव था। वोडियार राज्य के प्रमुख लोग इसमें भाग लेते थे। सेना की परेड भी होती

थी। प्रसिद्ध संगीतकार, नर्तक, पहलवान, कारीगर परेड में भाग लेते थे। इनके साथ सजे हुए हाथी, ऊँट, घोड़े, तोपें, बन्दूके, सोने, चाँदी से गढ़ी हुई बग्गियें जुलूस की शोभा में चार चाँद लगा देती थी।

शाही हाथी के ऊपर बँधे हुए सोने के सिंहासन पर बैठकर महाराजा जुलूस में भाग लेते थे। महल के आहते में महाराजा पूजा करते थे। परेड में सबसे पहले पौराणिक प्रतीक का शुभ "नन्दी कम्बा होता था। नर्तक जगह-जगह रुककर नृत्य करते थे। हज़ारों की भीड़ सड़क के दोनों तरफ़ खड़े होकर तमाशा देखती थी।

हालांकि वर्षों से मैसूर परेड की शानो शौकत में कोतहाई हुई है। लेकिन आज भी मैसूर में दशहरा धूमधाम से मनाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में दशहरा

हिमाचल प्रदेश के "कुल्लूवैली" में दशहरा रंग बिरंगे अनोखे ढंग से मनाया जाता है। पहाड़ी लोगों का समुदाय इसे बड़े धूमधाम से मनाता है। भगवान रघुनाथ की सोने और चाँदी की मूर्तियाँ जुलूस में ले जाई जाती हैं।

तमिलनाडु में दशहरा

तमिलनाडु में ये उत्सव नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। इसका विशेष आकर्षण होता है गुड़ियों और दृश्यों की प्रदर्शनी। (बोम्मई कोलु) ये प्रदर्शनी घर-घर में होती है।

ये गुड़ियाएँ एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को देती चली जाती है। इसमें आधुनिक गुड़ियाएँ और देवी देवताओं की प्रतिमाएँ रखी जाती हैं। इसमें अलग-अलग कहानियाँ होती हैं। गाँव के दृश्य, शादी के दृश्य, संगीत के बैण्ड, और ऐयरपोर्ट,

रामलीला

उत्तर भारत में दशहरा रावण पर राम की विजय का प्रतीक है, जिसने सीता का हरण कर लिया था। राम लीला वास्तव में राम की कथा है। जो लोक कथा के रूप में लोक संगीत और नृत्य में प्रस्तुत की जाती है। इसके अतिरिक्त असुर रावण, उसके भाई कुम्भकर्ण और उसके पुत्र इन्द्रजीत के बड़े-बड़े पुतलों को भी जलाया जाता है।

स्कूल, बाज़ार, और बंदरगाह के दृश्य दिखाई देते हैं।

हर बच्चे के लिए यह एक विशेष दिन होता है। वे इसी दिन से विद्या अध्ययन आरम्भ करते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो कार्य आरम्भ होता है, वह सम्पन्न होता है।

गुजरात में नवरात्रि

गुजरात में नवरात्रि आनन्द और पूजा के दिन होते हैं। गुजराती महिलाएँ रंग बिरंगी पारंपरिक घाघरा चोली पहनकर मिट्टी के दिये के चारों ओर नृत्य करती हैं। तालियों के साथ वो थिरकती हैं। युवक और युवतियाँ, भड़कीले रंगों की गुजरात की पारंपरिक ''चनिया चोलियाँ'' केड़िया पहनते हैं।

पुराण कथा के अनुसार भगवान कृष्ण और गोपियों ने ''रास नृत्य'' को सम्पूर्ण किया था। रास नृत्य के कई प्रकार हैं। उनमें से डाँड़िया एक है। नौजवान नाचनेवाले लड़के और लड़कियाँ हाथों में छोटी लकड़ी (डाँड़िया) पकड़े रहते हैं, संगीत की लय पर उन्हें पीटते रहते हैं। इसके दूसरे रूप में नाचनेवाले लय पर तालियाँ बजाते हैं, इसे ''गरबा'' कहते हैं।

''गरबा'' गुजरात का सबसे प्रसिद्ध लोकप्रिय नृत्य है। कहा जाता है कि भगवान कृष्ण के पोते अनिरुद्ध की पत्नी उषा ने इसका आरम्भ किया था। प्रत्येक घर में नई-नवेली बहू को गरबा सजाने को कहा जाता है। सभी सुहागिने मिलकर पूजा करती हैं और अपने पति तथा परिवार की मंगल कामना करती हैं।

चलो कुछ बनाएँ!

रंग-बिरंगे कागज के बने फूलों-पत्तियों की सजावट के बिना कौनसा त्यौहार सुन्दर लगेगा? यहाँ देखिए एक बॉल हैंगिंग है, जो रंगीन कागज से बनी है।

तीन भिन्न रंगों के कागज ले लो। लाल-नीला और पीला रंग यहाँ पर प्रयोग में लाया गयाहै।

आपके पास एक स्केल, एक पेंसिल, एक जोड़ी कैंची, गोंद और सूई धागा होना चाहिए।

१. सभी रंगों के पेपर के सात हिस्से काट लीजिए और इनके छोरों पर गोंद लगाइए। टुकड़े इन नाप के होने चाहिए : नीला - १५ x १ सें.मी., पीला - १२.५ x १ से.मी., लाल - १० x १ से. का होना चाहिए।

२. नीले रंग के टुकड़े के सँकरे भागों को एक साथ कर लें और उन्हें मध्य में सी दें। उसके किनों को चिपका दे जहाँ वे एक-दूसरे से मिलते है।

३. लाल रंग के टुकड़ों को नीले रंग के टुकड़ों के भीतर लगाओ। पीले रंग के टुकड़े दो नीले टुकड़ों के बीच में लगाए जाएँगे।

४. एक लूप में धागा लगाकर इस तैयार हैंगिंग को दिवार पर टाँग दो।

आप लोग यह हैंगिंग बनाने के लिए किसी और बस्तु और रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसका नाप छोटा बड़ा भी हो सकता है, जो आँखों को अच्छा लगे।

दशहरा की शुभकामनाएँ

हास्यास्पद व्यक्ति - जादुमनी

१९वीं सदी के उड़ीसा के कवि जादुमनी के पिता गुणवान शिल्पकार थे। उन्होंने कृष्ण की मूर्ति बनाई। जादुमनी ने पूछा, "इस राधानाथ को कहाँ ले जाया जाय?" "हम इसके लिए एक मंदिर बनाएँगे।" पिता ने कहा।

मुकुन्द ने अपना सारा धन मंदिर बनाने में लगा दिया। जब वह मरा तो उसके क्रिया-कर्म के लिए भी धन नहीं था। जादुमनी असमंजस में था। "सिर्फ राजा ही मेरी मदद कर सकता है। लेकिन मैं उसके पास जाऊँ कैसे? मैं क्या करूँ?" वह सोचने लगा।

दोपहर हो चुकी थी। मूर्ति को भोग लगा दिया गया था। मंदिर को बंद करके पुजारी भी जा चुका था। अचानक उसे याद आया "अरे नायागरह का राजा इस समय यहाँ से गुजरेगा।" वह दौड़कर वहाँ गया और मंदिर के दरवाज़े को पीटने लगा, "भैय्या राधानाथ कृपा करके जागिए।"

राजा की डोली वहाँ से गुज़री। एक आदमी को मंदिर का दर्वाजा पीटते हुए देखकर राजा बहुत हैरान हुआ। उसने डोली के एक कँहार को पता लगाने के लिए भेजा।

राजा पालकी में प्रतीक्षा करने लगा और कँहार जादुमनी के पास गया। ''राजा !'' वह चकित होता हुआ बोला और कँहार ने उससे कुछ कहा।
जादुमनी उस कँहार के पीछे चला गया। ''महाराज ! यह जादुमनी है। इसके पिता का नाम मुकुन्द था, जिसने कृष्ण की मूर्ति बनाई थी।'' कँहार ने कहा। राजा गुस्से से बोला, ''ऐ नौजवान, तुम यह क्या कर रहे हो? तुम पागल तो नहीं हो गए?''
जादुमनी झुका और बोला, ''यह राधानाथ मेरे बड़े भाई हैं। मेरे पिता ने इनका निर्माण तब किया, जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था। बड़ा पुत्र होने के नाते क्या इनका कर्तव्य नहीं कि ये मेरे पिता का अंतिम संस्कार करें, महाराज? पर यह उठते ही नहीं हैं।''
राजा ने सिक्कों की एक थैली निकाली। ''तुम्हारे राधानाथ अभी नहीं उठेंगे। यह लो और अंतिम संस्कार को रोको मत। जब यह अंतिम संस्कार पूरा हो जाए तो मेरे दरबार में आना। मैं तुम्हारी इस चालाकी और हास्यास्पद बातों से और प्रसन्न होता, और अधिक आनन्द लूट सकता, यदि यह ऐसे समय पर न घटित होती तो !
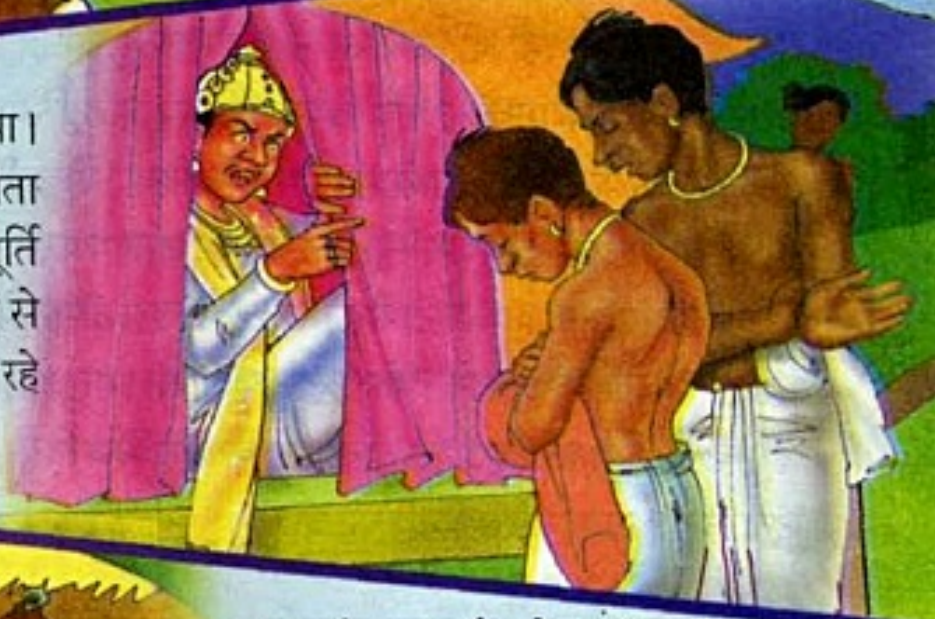
समाचार झलक

सचमुच, कुछ गोलमाल नहीं

इसमें कोई शक नहीं, यह मछली के बारे में ही है। एक काली मारलिन, चार साल में १३.००० कि.मी. तैरी। यह चार साल की यात्रा १९९६ के दौरान शुरु हुई। बैरिल येट्स एक नाव पर जा रही थी, जब उसने यह मछली पकड़ी। उसने उस पर एक पुन्छल्ला लगा दिया और उसे ऑस्ट्रेलिया की ''ग्रेट बैरियर रीफ़'' के पास समुद्र में छोड़ दिया। पिछली मई में, यह मछली ''क्यूपोस'' में मछुआरों के जाल में फसी। ''सेन्ट्रल अमरीका के कोस्टा रीका'' क्षेत्र में। इस दौरान ये मछली ''पैसेफिक ओशन'' को पारकर चुकी थी। मछुआरों ने पुन्छल्ला निकालकर अनुसंधानवालों के पास भेज दिया, उन्होंने यह खबर बैरिल येट्स को दी।

सर्कस बिना जानवरों का

सब जानवरों पर नहीं, यह पाबन्दी भारत में सर्कस में काम करने के लिए, शेर, चीता, रीछ, तेन्दुआ और बन्दर पर लगाई गई है। केन्द्रीय सरकार की यह पाबन्दी, सर्वोच्च न्यायालय ने स्वीकार कर ली है। सर्वोच्च न्यायालय का फैसला उस समय सुनाया गया जब 'सर्कस फेडरेशन ऑफ इन्डिया' और कुछ सर्कस मालिकों ने अपील दायर की थी। सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना कि प्रशिक्षा के दौरान, जानवरों पर क्रूर व्यवहार किया जा सकता है। चालीस साल की लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद यह फैसला अमल में आया।

सबसे लम्बी ट्रेन

आप इसकी लम्बाई का सिर्फ़ अन्दाज़ा लगा सकते हैं। अगर आप इसे जानना चाहते हैं तो आपको हवाई जहाज़ में जाना पड़ेगा क्योंकि इस ट्रेन का पूरा जायज़ा ऊँचाई से लिया जा सकता है। अब इस ट्रेन की तफ़सील। जब यह ट्रेन पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया से रवाना हुई तो इसमें ६८२ डिब्बे थे। (यात्रियों के सफर करने के डिब्बे नहीं, माल ढोने के डिब्बे) इसे ८ भारी-भरकम इन्जन पीछे से धक्का दे रहे थे। यह ७.३५ कि.मी. लम्बी थी। यह चल नहीं रही थी रेंग रही थी।

एक तोते का संदेश

इंग्लैंड में आपत्तिकालीन टेलीफोन नम्बर ९९९ है। मैनचैस्टर पुलिस को इस नम्बर पर फोन आया। पुलिस ने उस कॉल की जगह का पता लगा लिया। जब पुलिस फ्लैट में दाखिल हुई तो उसने एक आस्ट्रेलियन तोते को टेलीफोन के पास बैठा हुआ पाया। रिसीवर हुक से अलग था। तोते ने अपने पैरों से ९ नम्बर तीन बार दबा दिया था!

जिस दिन जलेबी पेड़ पर उगी

अर्जुन गाँव में बहुत होशियार नौजवान था। वह हाथों से काम करने में निपुण था। वह चहार दीवारी दुरुस्त कर सकता था, कपड़े सी सकता था, लकड़ी के खिलौने बना सकता था, और इस तरह के सैकड़ों काम कर सकता था। लेकिन अफ़सोस, उसकी पत्नी के बारे में ये सब नहीं कहा जा सकता था। न वह होशियार थी न कारगर। वह एक नम्बर की बड़बड़िया थी।

गाँव भर के लोगों की भलाई-बुराई इकट्ठा करना उसका शौक था। उसकी बातचीत और बर्ताव से, अर्जुन को कई बार शर्मिन्दा होना पड़ता था। लेकिन वह किसी का नुक़सान नहीं करना चाहती थी। अर्जुन उससे प्यार करता था।

एक दिन अर्जुन की पत्नी आलू खाना चाहती थी। लेकिन घर में आलू नहीं थे। अर्जुन ने आलू लाने का उससे वादा कर दिया। वह एक जंगली खेत में गया और एक हरी जगह को होशियारी से खोदने लगा। लेकिन उसकी कुदाली नरम जगह से नहीं टकराई। उसने और गहराई तक खोदा। उसकी साँस रुक गई। जमीन में चमचमाते हुए सोने के सिक्कों से भरा हुआ एक घड़ा था! ये कहाँ से आया?

अर्जुन ने सोचा, ''एक हफ्ता पहले जब उसने यह जगह खोदी थी, आलुओं के लिए, तब तो यह घड़ा वहाँ नहीं था। यह घड़ा हाल ही में गाढ़ा गया है, लगता है। शायद यह किसी चोर का काम है। बेचारा चोर! उसने अपनी लूट का माल खो दिया और मैंने पा लिया'' अर्जुन ने भी जान लगायी। ''यह मुझे मिला है, इसलिए मैं इसे रख लूँगा'' यह फैसला करके वह घड़ा लेकर अपने घर की तरफ़ चल पड़ा।

लेकिन एक विचार आते ही वह एक जगह ठिठक के खड़ा हो गया। ''मैं रती को यह कैसे बता सकता हूँ? वह अपने सारे दोस्तों को बता देगी। पुलिस उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगा देगी।

अगर मैं कहूँगा कि यह मुझे आलू के खेत में मिला तो मेरा कौन विश्वास करेगा'' उसने सोचा। उसने धीरे से घड़े को ज़मीन पर रखा और सोचने लगा।

धीरे-धीरे उसे एक रास्ता सुझाई देने लगा। उसने एक योजना बनाई। वह चल पड़ा और उसे एक जगह पसंद आई। उसने एक मोटे से बरगद के खोखले तने में उस घड़े को अच्छी तरह छुपा दिया और वहाँ से चल पड़ा।

वह गाँव लौट आया और मंदिर के पास वाली मिठाई की दुकान पर गया। ''गोविन्द चाचा मुझे एक किलो जलेबी दे सकते हो?'' ''क्यों नहीं?'' यह कहकर गोविन्द चाचा ने खुशी-खुशी थाल भरी जलेबियाँ उसे दे दीं।

अब अर्जुन फलवालों की दुकान पर आया और केलों का एक बहुत बड़ा झूआ खरीद लिया और फिर - वह घर नहीं गया। ये दोनों चीज़ें लेकर जंगल में गया और अपनी योजना को साकार किया और घर की तरफ दौड़ पड़ा।

रती ऊब चुकी थी। ''मैंने सारा खाना बना लिया, बस आलू बनाने रह गये हैं। इतनी देर कहाँ लगा दी'' उसने झुँझला कर पूछा।

''जंगल में, पेड़ पके हुए आमों से लदे हुए है चलो हम आम ले आते हैं। खाने के साथ आम की मीठी चटनी खाऊँगा'', उसने रती की बात चालाकी से टालते हुए कहा।

दोनों जंगल की तरफ़ चल पड़े। अर्जुन उसे आम के पेड़ के पास ले गया जो बरगद के पेड़ के पास था। ''मैं आम तोड़ती हूँ'' रती ने कहा।

लेकिन वह ठिठक कर खड़ी हो गई। ''इस पेड़ पर तो जलेबी लगी हुई है'' उसने ताज्जुब से कहा।

''यह नामुमकिन है'' अर्जुन ने हँसते हुए कहा और उसके पास गया।

यह जलेबियाँ अर्जुन ने लटकाई थीं। यह ही उसकी योजना थी, लेकिन उसने झूठी हैरानी जताते हुए कहा, ''ये तो चमत्कार हो गया ! आम के पेड़ पर जलेबी !''

''तुम पूजा के लिए कुछ फूल क्यों नहीं तोड़ लेती। मैं दूसरा आम का पेड़ तलाश करता हूँ'' यह कहकर अर्जुन ने फूलों की झाड़ियों की तरफ़ इशारा किया। दो मिनट के बाद उसे रती की चीख सुनाई पड़ी।

''फूलों की झाड़ियों में केले'' वे हैरानी से बोली अर्जुन को तो मालूम ही था वहाँ केले हैं क्योंकि उसी ने उन्हें वहाँ लटकाया था। लेकिन जब रती उसके पास दौड़ी हुई आई तो उसने हैरानी जताई ''मुझे फूलों की झाड़ियों से ये केले मिले'' कुछ पके हुए केले अर्जुन के हाथ में देते हुए उसने कहा।

''आम के पेड़ पर जलेबियाँ, फूलों की झाड़ियों में केले ! आज का दिन तो बड़ा चमत्कारी दिन है।'' यह कहते हुए वह बरगद के पेड़ के सहारे टिक गया। उसने पेड़ को गौर से देखा और उछल पड़ा, ''एक और चमत्कार'' अर्जुन चिल्लाया।

''कैसा चमत्कार'' रती ने पूछा।

''तने की खोखली जगह में घड़ा'', यह कहकर उसने घड़ा बाहर निकाला।

''सोना'' उसने हैरानी से हाँफते हुए कहा और घड़ा लेकर घर की तरफ़ चल पड़े।

''याद रखना यह बात किसी को नहीं बताना।'' हालाँकि वह जानता था कि कुछ ही घंटों में यह ख़बर पूरे गाँव में फैल जाएगी।

''अजी बिल्कुल नहीं। मैं किसी को कुछ नहीं बताऊँगी'' उसने ईमानदारी से वादा किया।

उसने अपनी पक्की सहेली गीता को बता दिया और उससे क़सम ले ली कि वह किसी को नहीं बतायेगी।

गीता ने अपनी भाभी को बताया, भाभी ने अपनी चचेरी बहन को बताया, उसने अपने पड़ोसी को बताया, और एक घंटे के अन्दर अन्दर,

पुलिस चौकी में दरोगा और इन्सपेक्टर को भी ये बात मालूम हो गई।

''उस अर्जुन को पकड़कर यहाँ लाओ। यह बहुत ही गम्भीर बात है। कल रात बगीचे में बहुत सारा सोना मिला'' कहते हुए उसने दरोगा को हुक्म दिया। दरोगा ने तड़ाक से सलाम मारा और इन्सपेक्टर का हुक्म बजाने चल पड़ा।

चिड़चिड़ा दरोगा अर्जुन और उसकी पत्नी को पुलिस चौकी ले आया। ''ये मैं क्या सुन रहा हूँ'' इन्सपेक्टर ने उन्हें घूरते हुए उनसे पूछा।

सोने के सिक्कों से भरी हुई एक लॉरी सारे सोने के सिक्के तुम्हारे बगीचे में डालकर चली गई।'' इन्सपेक्टर ने पूछा।

''भरी हुई लॉरी ! नहीं साहब सोने के सिक्कों से भरा हुआ एक छोटा-सा घड़ा, हैरान रती ने जवाब दिया। अर्जुन चुप रहा।

''सोने से भरा हुआ घड़ा ! तुम्हें कहाँ मिला'' इन्सपेक्टर ने यकीन न करते हुए पूछा।

''आज सुबह कई चमत्कार हुए'' वह चहकी।

''चमत्कार?'' इन्सपेक्टर ने सवाल किया।

''हमने आम के पेड़ पर जलेबियाँ उगती हुई देखी, वह साँस लेने के लिए रुकी।

''हाँ साहब आम के पेड़ पर जलेबियाँ और फूलों की झाड़ियों में केले उगते हुए देखे'' वह बोलती गई।

''फूलों की झाड़ियों में केले'' इन्सपेक्टर ने सोचा कि ये औरत पगली है।

''और साहब हमें बरगद के पेड़ के तने में से मटका भरा सोना मिला'' इन्सपेक्टर ने उसके पति को दयापूर्ण दृष्टि से देखा। उसे यकीन हो गया कि ये औरत बिल्कुल पागल है।

''ये बात है, कोई बात नहीं जाओ, घर जाओ'' इन्सपेक्टर ने अर्जुन से कहा। ''इसका ठीक से ख्याल रखना।''

अर्जुन और रती घर की तरफ़ चल पड़े। अब उनके पास सोने से भरा हुआ घड़ा था। ''इन्सपेक्टर की बातों का क्या मतलब था'' रती ने भोलेपन से पूछा।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

उत्सवों का समय शुरु हो गया। इनमें कुछ का धार्मिक महत्व है, कुछ का फसल कटाई का और कुछ सामाजिक महत्व रखते हैं। इस महीने की पहेली भारत के जाने माने उत्सवों के बारे में है।

१. कौन सा उत्सव विष्णु के दशावतार से जुड़ा है?

२. राम के चौदह वर्ष वनवास के बाद अयोध्या लौटने से यह उत्वस जुड़ा हुआ है। सन् २००१ में यह कौनसी तारीख को मनाया जाएगा?

३. बच्चों की विद्या आरम्भ होती है। यह कौन सा दिन है? बंगालियों का सरस्वती पूजन का उत्सव एक और दिन मनाया जाता है। वह कौन सा दिन है?

४. भाई बहन को नज़दीक लानेवाला उत्सव कौन सा है?

५. पारसी अपने पैगम्बर का जन्म दिन किस दिन मनाते हैं?

६. मुस्लिमों के पैगम्बर के जन्म दिन का एक और नाम है। वह क्या है?

७. ईस्टर का क्या महत्व है?

८. बुद्ध पूर्णिमा और वैशाख पूर्णिमा के तीन महत्व हैं। वह क्या हैं?

९. एक उत्सव पर तमिलनाडु की महिलाएँ चावल को उबलने के बाद बर्तन से बाहर गिरने देती हैं। वह उत्सव क्या है?

१०. दक्षिण भारत के एक मंदिर में मकर संक्रांति का उत्सव एक विशेष घटना से जुड़ा हुआ है। वह कौनसा मंदिर है? वह घटना क्या है?

(उत्तर अगले माह)

सितम्बर माह की प्रश्नोत्तरी का उत्तर

१. नालन्दा।

२. रवीन्द्रनाथ टैगोर, १९०१ में।

३. कलाक्षेत्र, रुकमणी देवी अरुण्डेल।

४. १९८६।

५. शिमला।

६. पंडित मदन मोहन मालवीय।

७. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी।

८. बेसिक ऐजूकेशन ऑफ नैनीताल।

९. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद।

१०. १८५७।

११. १८३५। लॉर्ड मैकॉले द्वारा।

१२. डॉ. आदिशेषय्या, जो मद्रास यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सलर थे।

१३. द्रोणाचार्य।

१४. कलामण्डलम चेरुथूर्थी में।

१५. तक्षशिला।

देवी भागवत

शुक ने हठ किया कि विवाह नहीं करूँगा तो व्यास ने स्वरचित देवी भागवत् सुनायी।

विष्णु बरगद के पत्ते पर बालक बने विराजमान थे। वे सोचने लगे, "मैं यहाँ बालक बनकर क्यों हूँ? किसने मेरी सृष्टि की? ये विवरण मुझे कैसे मालूम हो पायेंगे? उसे इस परिस्थिति में देखकर देवी के हृदय में दया जाग उठी। उन्हें उन्होंने आधा श्लोक सुनाया और कहा, "यही सबकुछ है। अगर यह जान जाओगे तो समझ लेना, तुम अपने को भी जान गये।"

विष्णु ने वह आधा श्लोक सुन तो लिया पर वे उसका अर्थ समझ नहीं पाये।

वे उस आधे श्लोक का पठन करने लगे। इतने में महादेवी विष्णु के सम्मुख प्रत्यक्ष हुई। उनके चार हाथों में शंख, चक्र व गदा आदि थे। उन्होंने उत्तम कोटि के स्वर्ण वस्त्र पहन रखे थे। उनकी ही जैसी शक्तियाँ भी उनके साथ-साथ आयीं।

महादेवी को देखकर विष्णु दिग्भ्रांत रह गये। उनके मुँह से कोई बात नहीं निकली। तब देवी ने उनसे कहा, "माया के कारण तुमने मुझे भुला दिया। अब तुम सगुणी हो, मैं हूँ सत्वशक्ति। तुम्हारी नाभि के कमल में ब्रह्मा का जन्म होगा। रजोगुणी होकर वह लोकों की सृष्टि करेंगे। उस सृष्टि पर तुम्हारा शासन चलेगा। उस ब्रह्मदेव की भौंहों के बीच में से क्रोध के कारण रुद्र का जन्म होगा। वह रुद्र घोर तपस्या करेगा। फलस्वरूप वह सगुण बनेगा। प्रलय काल में ब्रह्मा से रचित संसार का वह सर्वनाश करेगा। मेरी सहायता प्राप्त करके ही तुम ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण कर पाओगे, अतः मुझ सत्वशक्ति को जानो और

पहचानो। मैं सदा तुम्हारे वक्षस्थल में ही निवास करूँगी।'' तब विष्णु ने महादेवी से कहा, ''मैंने एक आधा श्लोक सुना। आप बताइये मैंने उसे कैसे सुना?''

''मुझे तुम सगुण के रूप में देख रहे हो। तुम्हें जिन्होंने यह आधा श्लोक सुनाया, वे हैं निर्गुण स्वरूपी परदेवता। यह भागवत् नाम का मंत्र है। इसका पठन करते रहने से शुभ होगा'', देवी ने कहा।

विष्णु ने उस मंत्र के बल के आधार पर ही मधुकैटभुओं को मार डाला। उनसे भयभीत शरणागत ब्रह्मा को उन्होंने इसका उपदेश दिया। ब्रह्मा ने नारद को और नारद ने व्यास को इसका उपदेश दिया। व्यास ने शुक को इसका उपदेश देते हुए कहा, ''मैंने इसकी रचना अनेकों संहिताओं में बिस्तृत रूप से की।''

शौनकादि मुनियों ने शुक की कथा सुनने के बाद सूत से अभ्यर्चना की कि वे देवी भागवत् की कथाएँ सुनायें। तब सूत ने यों कहना शुरु किया।

अयोध्या नगर कोसल देश की राजधानी थी। धृवसंधि नामक राजा इसके शासक थे। उनकी मनोरमा, लीलावती नामक दो पत्नियाँ थीं। मनोरमा के पुत्र का नाम था सुदर्शन और लीलावती के पुत्र का नाम था शत्रुजित्त। धृवसंधि जब एक दिन आखेट कर रहा था, सिंह उसपर लपक पड़ा। सिंह और धृवसंधि के बीच घोर संग्राम हुआ और अंत में दोनों मर गये।

मनोरमा का पिता बीरसेन कलिंग देश का राजा था। अपने दामाद की मृत्यु का समाचार पाते ही अपने पोते सुदर्शन को देखने वह वहाँ आया। उसी प्रकार उज्जयिनी से शत्रुजित्त के मातामह युधाजित्त भी वहाँ आये।

सुदर्शन राजा बने या शत्रुजित्त? इस विषय को लेकर दोनों माताओं के बीच भिन्न-भिन्न अभिप्राय थे। दोनों में शत्रु-भाव बढ़ा। बात यहाँ तक पहुँच गयी कि इस संघर्ष में युधाजित्त ने वीरसेन को मार ड़ाला।

मनोरमा बालक सुदर्शन को लेकर भरद्वाज के आश्रम में पहुँची। भरद्वाज ने उसका और उसके पुत्र का स्वागत किया और शत्रुओं के आक्रमण से उन्हें बचाया। सुदर्शन को विद्याएँ सिखायीं। युक्तवयस्क होने पर सुदर्शन को एक दिन सपने में महादेवी ने दर्शन दिये और उसे अस्त्र विद्या प्रदान की।

शशिकला काशी के राजा सुबाहु की पुत्री थी। वह अद्‌भुत सौंदर्यशशि थी। यह जानकर सुदर्शन ने उससे बिवाह रचाना चाहा। उसी प्रकार शशिकला ने भी सुदर्शन से बिवाह करने का निश्चय किया।

सुबाहु ने अपनी पुत्री शशिकला के स्वयंवर

की घोषणा की। अनेकों देशों से राजा काशी आये। पर शशिकला का आग्रह था कि सुदर्शन के सिवा कोई और उसका पति हो ही नहीं सकता।

रानी ने अपनी पुत्री से कहा, "पुत्री, तुमसे बिवाह रचाने के लिए कितने ही राजा यहाँ आये हुए हैं। ऐसी स्थिति में तुम्हारा यह हठ समुचित नहीं लगता। तुम्हारा यह कहना संगत नहीं है कि सुदर्शन के सिवा मैं और किसी से बिवाह नहीं करूँगी। इससे बिपत्तिमें फंस जायेंगे। और राजा हमारे शत्रु बन जायेंगे। लड़ाई छिड़ जायेगी। हम कहीं के न रहेंगे। तुम स्वयंवर की सभा में अवश्य आना। अगर तुमने सुदर्शन से ही बिवाह करने का हठ किया तो युधाजित्त उस सुदर्शन के साथ-साथ तुझे, मुझे और तुम्हारे पिता को भी मार डालेगा। वह बड़ा ही दुष्ट और क्रूर है।" उसने यों अपनी पुत्री को समझाने की कोशिश की। उसकी बातों में प्रेम भी था और थी चेतावनी भी।

पर शशिकला ने किसी और से शादी करने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। उसने अपने पिता से स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "आप इन राजाओं से डरते हैं। अगर यह सच है तो एक काम कीजिए। सुदर्शन से मेरा बिवाह करा दीजिए और हमें रथ में बिठाकर राज्य की सरहद के पार पहुँचा दीजिए। अगर युद्ध छिड़ गया तो वे स्वयं शत्रुओं को मार डालेंगे।"

"देखो पुत्री, अनेकों से बैर मोल लेना अच्छा नहीं होता। उन सबके विरुद्ध लड़ना किसी के बस की बात भी नहीं है। समझ लेना कि मैंने तुम दोनों को रथ में बिठाकर सरहद के पार पहुँचा भी दिया तो इसका क्या भरोसा कि वे दुष्ट तुम्हें घेर नहीं लेंगे और तुम दोनों को मार नहीं डालेंगे? उस स्थिति में तुम लोग कर भी क्या सकते हो? मुझे

एक उपाय सूझ रहा है। सीता के बिवाह के लिए जिस प्रकार से एक परीक्षा निर्धारित की गयी थी, मैं भी ऐसी ही परीक्षा प्रस्तावित करूँगा। उस परीक्षा में जो उत्तीर्ण होता है, उससे बिवाह कर लेना", सुबाहु ने पुत्री से कहा।

"क्या इससे समस्या का परिष्कार हो जायेगा? परीक्षा में कोई जीत जाए और मुझसे वह शादी कर ले तो क्या शेष राजा चुप रह जाएँगे? किसी भी स्थिति में युद्ध टाला नहीं जा सकता। महादेवी पर विश्वास रखिए और सुदर्शन के साथ मेरा बिवाह कर दीजिए।" शशिकला ने कहा। पुत्री की निर्णीत योजना को स्वीकार किया सुबाहु ने।

सुबाहु ने रहस्यपूर्वक बिवाह की तैयारियाँ कीं। उसने सुदर्शन को बुलवाया और शास्त्रोक्त कन्यादान किया। उसने अपने दामाद को दो सौ रथ, हज़ारों घोड़े, कुछ सौ हाथियों तथा अन्य मूल्यवान भेंटें दहेज के रूप में दीं। फिर उसने समधिन मनोरमा से कहा, "देवी, अब से मेरी
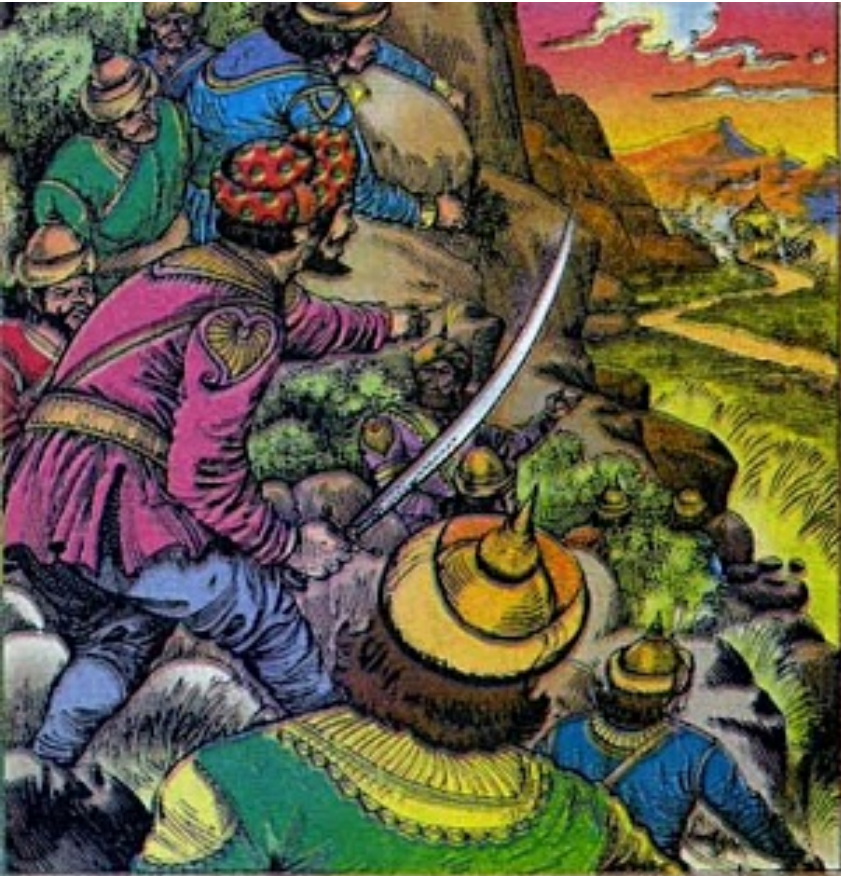
पुत्री तुम्हारे पुत्र की धरोहर है। तुम भी प्रेमपूर्वक उसकी देखभाल करना।''

मनोरमा संतुष्ट हो बोली, ''महोदय, महाराज होते हुए भी राज्य विहीन मेरे पुत्र से आपने अपनी पुत्री का बिवाह रचाया। आप जैसे उत्तम पुरुष बिरल ही होते हैं। आपकी पुत्री की जिम्मेदारी हम पर है तो हमारी जिम्मेदारी आप पर है।''

इसपर सुबाहु ने कहा, ''देवी, आप क्यों समझती हैं कि आपका पुत्र राज्य विहीन है? क्या मेरा राज्य उसका नहीं है? मेरी सारी सेना उसकी है। हम क्यों समझ बैठें कि कोई राजा है तो कोई सेवक। जगदंबा जब हमारे साथ हो तब हम भयभीत क्यों हों?''

''कितनी मीठी बात कही आपने। आपका शुभ होगा। आप अपने देश के शासन-भार को संभालिए। जगन्माता की कृपा रही तो मेरा पुत्र अपने पिता के राज्य को पुनः प्राप्त करेगा। भाग्य अगर हमारा साथ दे तो मिट्टी छूने पर वह सोना बन जाती है। हम जो भी करते हैं, उसका परिणाम भी अच्छा होता है। सबके सब हमारी सहायता करने आगे आते हैं। अब मेरे पुत्र का समय अच्छा है, उसका कोई अहित नहीं होगा'', मनोरमा ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

सुबाहु ने चुपके से विवाह करा दिया और जब उन्हें बिदा करने लगा, तब कुछ लोगों ने आकर ख़बर दी कि अब बधूवर को बिदा मत कीजिए। रास्ते में शत्रु राक्षसों की तरह खा जाने तैयार बैठे हैं।

राजा सुबाहु अनुभवी था। वह इन बातों की सचाई जानता था। इसलिए उन्हें बिदा करने से झिझकने लगा। तब सुदर्शन ने उनसे कहा, ''राजन्, आप हमें भेजने में संकोच मत कीजिए। देवी जब मेरे पक्ष में हैं तो ये तथाकथित राजा मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकते।''

काशी राजा ने अपने दामाद को असीम संपदाएँ दीं और सेना सहित स्वयं उनके साथ-साथ गया। मार्ग मध्य में उनके आने की प्रतीक्षा में बैठे राजाओं ने उन्हें दूर से देखकर कहा, ''देखो वह रथ। वही सुदर्शन है। पत्नी समेत आ रहा है। चलो, उसे मार डालें।''

सुबाहु ने शत्रु राजाओं को रोका। सुदर्शन मंत्र जपने लगा। देवी का ध्यान किया। उस समय शत्रुजित्त व युधाजित्त उसपर टूट पड़े। सुबाहु ने आवेश में आकर शंख को फूंका और युधाजित्त पर बाण बरसाये। दोनों में घमासान लड़ाई हुई।

इतने में जगदंबा दिव्य आकार में, अनेकों महा आयुधों सहित, पुष्प मालाओं के साथ सिंह पर सवार हो प्रत्यक्ष हुईं। देवी को देखकर सुदर्शन का शरीर आनंद से पुलकित हो उठा। उसने ससुर को देवी को दिखाया और कहा, ''अब हमें डरने

की कोई ज़रूरत नहीं है।'' फिर वह रथ से उतरा और अपनी पत्नी व ससुर सहित देवी के पाद-पद्मों को प्रणाम किया।

हाथी सिंह को देखकर डर गये। वे चिंघाड़ने लगे। सिंह उन्हें देखकर गरजने लगा। उसी समय पर हवा तेज़ी से चलने लगी। राजा मन ही मन डरने लगे। वे दिशाशून्य होकर निस्तेज खड़े रह गये।

तब सुदर्शन ने सेनापति से कहा, ''महादेवी हमारे साथ हैं। निःसंकोच तुम शत्रुओं पर टूट पड़ो। अपनी सेना को आज्ञा दो।''

काशी राजा की सेनाएँ राजाओं पर टूट पड़ीं।

निश्चेष्ट खड़े राजाओं से तब युधाजित्त ने कहा, ''किसी स्त्री को सिंह पर सवार देखकर तुम लोगों की मति क्या भ्रष्ट हो गयी? एक अयोग्य अपने साथ एक स्त्री को ले आया है। राजा होकर इतना डर क्यों रहे हो। वह भी एक अबला स्त्री से। आगे बढ़ो! क्षण भर में सुदर्शन को मौत के घाट उतार देंगे और राजा की बेटी को अपने वश में कर लेंगे।'' यों कहकर पोते शत्रुजित्त को लेकर आगे बढ़ा और सुदर्शन से युद्ध करने लगा।

तब देवी ने सभी राजाओं को अपने अनेकों आकारों में दर्शन दिये और सबके साथ एक साथ अकेली लड़ती रहीं। क्षण भर में युधाजित्त और शत्रुजित्त बाणों के वारों के शिकार होकर धराशायी हो गये। सुबाहु ने आनंद भरे आँसुओं से उस पराशक्ति का स्तोत्र किया। फिर उसने देवी से कहा, ''माँ, तुम्हारे दर्शन पाकर धन्य हो गया। शाश्वत रूप में मेरे हृदय में बस जाओ माँ! काशी में ही रह जाना। मुझे किसी और के सहारे की आवश्यकता नहीं है। कहते हैं कि जब तक भूमि का अस्तित्व होगा, तब तक काशी भी रहेगा।

जब तक काशी है तब तक यहीं रहना और मुझे व इस काशी को शत्रु-भय से मुक्त रखना। मैं बस, तुमसे यही वर चाहता हूँ।''

महादेवी ने इसके लिए अपनी स्वीकृति दी।

तदुपरांत सुदर्शन ने पहादेवी का स्तोत्र किया। उसने कहा, ''माते, अब मेरा कर्तव्य क्या है? मैं कहाँ जाऊँ? मैं स्वयं असमर्थ हूँ, पर तुम्हारे साथ रहते हुए मैं कोई भी कठिन से कठिन लक्ष्य भी साध सकता हूँ। अतः मेरा कर्तव्य क्या है, सुझाना और मुझपर कृपा करना।''

इसपर देवी ने कहा, ''अब करना और क्या-क्या है? अपनी पत्नी समेत अयोध्या जाओ, सिंहासन पर आसीन हो न्यायपूर्वक शासन चलाना। मैं तुम्हारी रक्षा करती रहूँगी। हर अष्टमी, नवमी, चतुर्दशि पर मेरी पूजा करते रहना। मुझे शरत काल बहुत पसंद है। नवरात्रि पूजाएँ करते रहना। माघ, चैत्र, अश्वयुज, आषाढ़ माहों में मेरे उत्सव मनाते रहना।'' यों कहकर वे अदृश्य हो गयीं।

फिर एक-एक करके राजा आगे आये और जिस प्रकार से देवी-देवताएँ इंद्र को प्रणाम करते हैं, सुदर्शन को प्रणाम करते रहे और अंबा की स्तुति की। उन सबने उसे अपने चक्रवर्ती के रूप में स्वीकार कर लिया।

सुदर्शन के अयोध्या पहुँचने के पहले ही वहाँ ख़बर पहुँच गयी। इसलिए मंत्री मंगलवाद्यों सहित उसका स्वागत करने आये और सुदर्शन व उसकी पत्नी को सादर नगर में ले गये।

सुदर्शन अपनी सौतेली माँ के पास गया, जो अपने पुत्र की मृत्यु पर विलाप कर रही थी। उसने सौतेली माँ से कहा, ''माँ, आपके पुत्र और पिता को मैंने नही मारा। महाशक्ति ने उनका संहार किया। उनके किये पापों को लेकर तुम क्यों दुखी होती हो?

आप मुझे अपना पुत्र ही समझिए। सदा मैं आपकी सेवाएँ करता रहूँगा। मैं जब बालक था तब आपके पिता ने लोभ में आकर, पाप भरे उद्देश्य से मुझे देश निकाला दे दिया। मैंने तो इसे केवल अपना दुर्भाग्य माना। जब मेरी माँ दुखभरित होकर जंगल के रास्ते से मुझे ले जा रही थी, तब लुटेरों ने हमें लूटा।

फिर हमने गंगा तट पर स्थित ऋषि के आश्रम में शरण ली। उन्हीं के अनुग्रह के बल पर इतना बड़ा बन पाया हूँ। अब भी मैं किसी से द्वेष नहीं करता। किसी के प्रति मेरी शत्रु-भावना नहीं है।''

उसकी बातों पर लीलावती लज्जित होती हुई बोली, ''मैं मना कर रही थी, फिर भी मेरे पिता ने तुम्हारे साथ द्रोह किया। वे स्वयं नहीं मरे बल्कि मेरे पुत्र को भी मरवा ड़ाला। तुम्हारी माँ मेरी दीदी है, तुम मेरे सगे पुत्र समान हो। मैं भला क्यों चिंतित होऊँ? क्या मैं नहीं जानती कि तुम उनकी मृत्यु के कारक नहीं हो?''

फिर सुदर्शन ने अपने मंत्रियों की सहायता से एक सुवर्ण सिंहासन का निर्माण करवाया। उसपर जगदंबा के मूर्ति की स्थापना की और हर दिन उसकी पूजा करने लगा। राज्याभिषेक हो जाने के बाद सुखपूर्वक दीर्घकाल तक शासन सुचारू रूप से चलाता रहा।
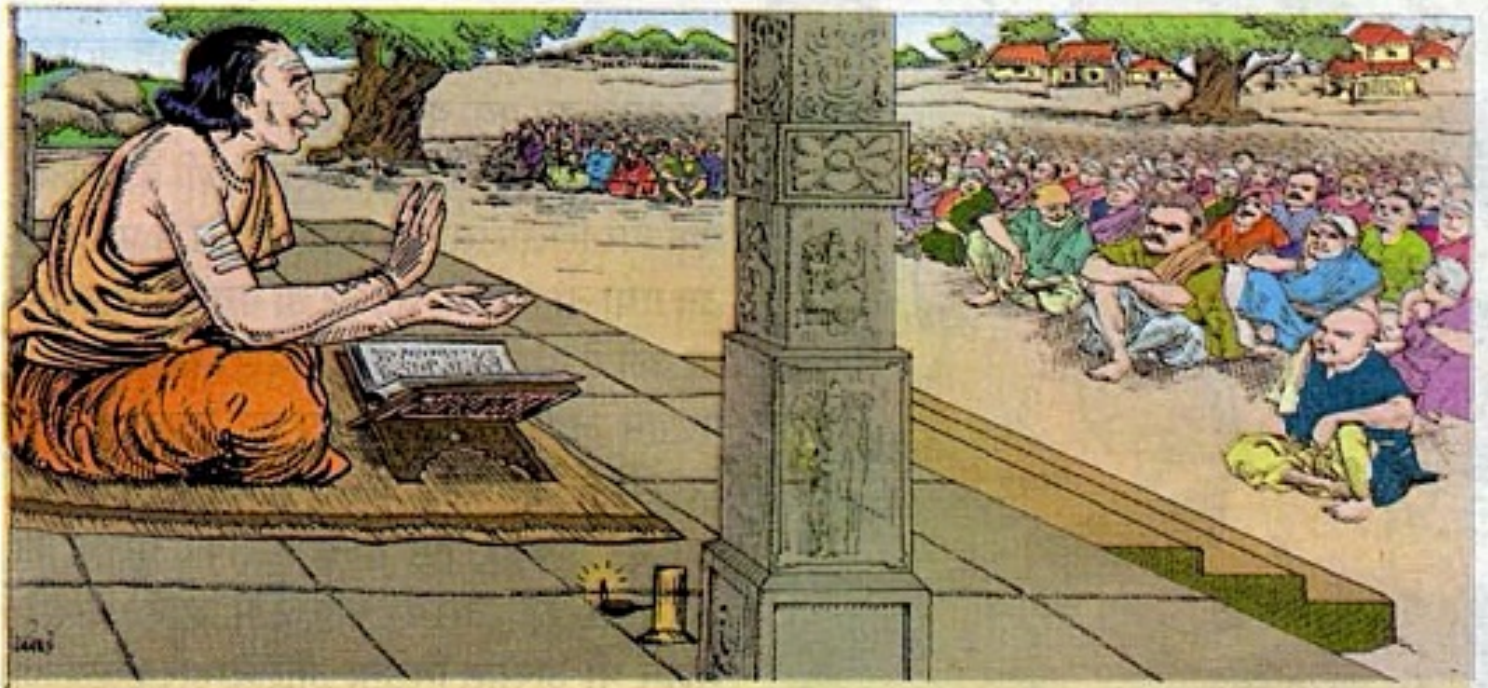
व्यस्तता

राघव हर दिन शाम को मंदिर जाया करता था और वहाँ आये भक्तों को पुराण सुनाया करता था। कोई अपना संदेह व्यक्त करे तो उसे सुस्पष्ट रूप से समझाता था। उनके प्रश्नों के समाधान देने में उसे अत्यंत आनंद होता था। इसके लिए वह उस दिन सबेरे ही घर पर आवश्यक तैयारी कर लेता था। शाम को पुराण की जिन घटनाओं को वह सुनाने जा रहा है, उनका अध्ययन कर लेता था ताकि श्रोताओं के संदेहों को वह दूर कर सके।

राघव की पत्नी सीता रूई की बलियाँ बनाती थी। उन्हें बेचने से थोड़ी-बहुत जो भी रकम मिलती, एक संदूकची में डालकर सुरक्षित रखती थी।

इनके तीन बेटे थे। बड़ा बेटा कौशिक बढ़ई था और इस काम में वह बड़ा ही निपुण था। उसकी पत्नी कमला दिन भर घर के काम-काजों में मग्न रहती थी। दूसरा अच्छा रंगसाज़ था। कुमार के बाद का तीसरा भाई नरसिंह घर के पीछे के बड़े बगीचे में माली था। उस बगीचे में फलवृक्ष ही नहीं थे बल्कि तरकारियों के व फूलों के पौधे भी थे। इससे हर रोज अच्छी आमदनी भी होती थी। वह दिन भर काम में लगा रहता था।

पूरा गाँव राघव के परिवार को आदर्श परिवार मानता है। बहुत-से लोगों का यह मानना था कि हर घर में काम करने की ऐसी उपयोगी प्रवृत्ति हो तो मन भी शांत रहेगा और घर के सदस्यों में एकता भी बनी रहेगी। किसी को भी दूसरे के विरुद्ध शिकायत करने की गुंजाइश नहीं होगी।

पड़ोसी गाँव के माधव का परिवार इससे बिल्कुल ही भिन्न था। उस घर में हर दिन सास-बहू के झगड़े भाईयों के बीच में मनमुटाव हुआ

किशन पुरोहित
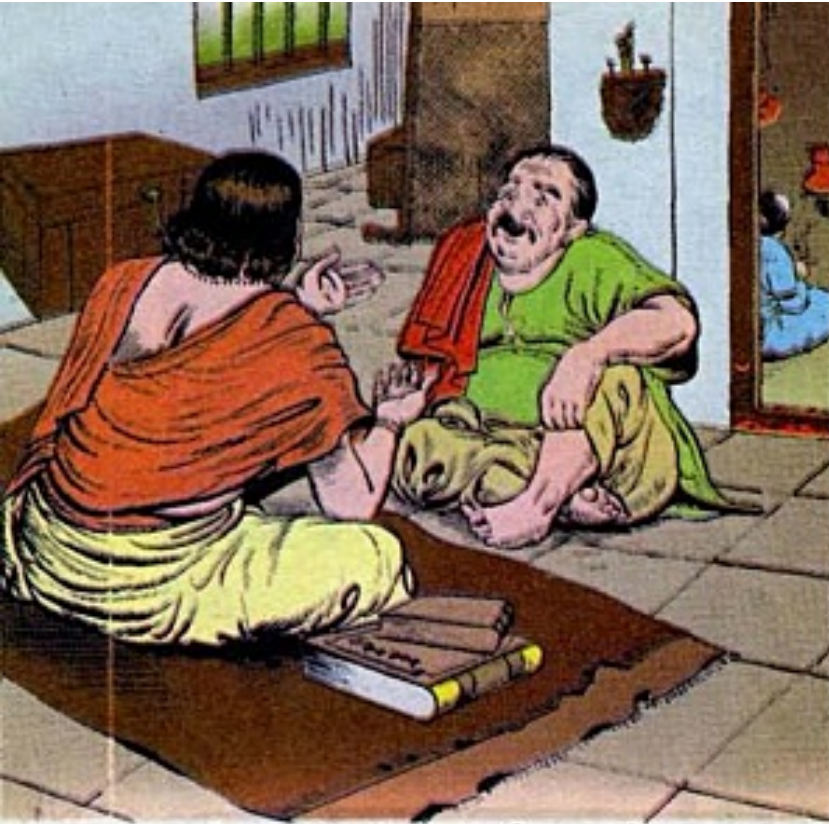
करते थे और ये उनके लिए सर्वसामान्य बात थी। माधव एक भी दिन शांत मन से बैठ नहीं पाता था।

राघव, माधव का दूर का रिश्तेदार था। माधव ने राघव के परिवार के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अनेकों सदस्यों से भरे एक परिवार में इतनी शांति हो सकती है और वे मिल-जुलकर रह सकते हैं। इसका रहस्य जानने वह अपनी पत्नी सुलक्षणा को लेकर राघव के घर पहुँचा। राघव के पूरे परिवार ने उस दंपति का हार्दिक स्वागत किया। बड़े ही आनंदमय वातावरण में उन सबने एक दिन गुज़ारा। दूसरे दिन राघव यथावत् अपने अध्ययन में लग गया। इसपर माधव ने आपत्ति जताते हुए कहा, ''दो दिन तुम्हारे साथ बिताने यहाँ आया हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि ये दोनों दिन तुम्हारे साथ रहूँ, तुमसे बातें करूँ और निश्चिंत होकर अपना समय बिताऊँ। तुम्हारा यह अध्ययन तो रोज़ चलता ही रहता है। अब यह बंद करो और बताओ कि आज हम क्या करें?'' इसपर राघव ने हंसकर कहा, ''प्राणियों में सबसे सुस्त प्राणी है मनुष्य। एक बार सिलसिला टूट गया, पद्धति में परिवर्तन आ गया तो समझो, वह टूट ही गया। यथास्थान पर उसे ले आना असाध्य कार्य है। ज़रूरत पड़ने पर हम अवश्य ही वार्तालाप कर सकते हैं। पर इस समय ऐसी कोई ज़रूरत मैं महसूस नहीं कर रहा हूँ।'' चलो, हम दोनों मिलकर पुराण का अध्ययन करें, उसकी गहराई में जाएँ। इससे, मुझमें भी उत्साह मिलेगा और तुम्हारे दृष्टिकोण से परिचित होऊँगा।''

''तब तो मुझे लगेगा कि तुम्हारे घर आकर मैंने तुम्हारा समय बरबाद किया, तुम्हारे चिंतन में बाधा डाली। आगे से मैं तुम्हारे घर नहीं आऊँगा'' माधव ने रूठकर कहा।

''मेरे घर में तुम्हें ऐसा नहीं लगेगा। तुम्हें महसूस नहीं होगा कि तुमने मेरे कामों में बाधा डाली। आगे जाकर तुम यह खुद जान जाओगे। चलो, अब हम पुराण के अध्ययन में लग जाएँ'' राघव ने शांतिपूर्वक कहा।

दोनों मिलकर पुराण का अध्ययन करने में लग गये। माधव को अभी-अभी ज्ञात हुआ कि पुराणों में इतना गहरा व गंभीर ज्ञान भरा पड़ा है। उसने नये और तरह-तरह के सवाल किये, जिनका उत्तर निःसंकोच राघव ने दिया।

माधव को अब सच्चाई और वास्तविकता जानने में देर नहीं लगी। वह कहने लगा, ''आगे से अगर तुम्हारे घर आऊँगा तो पुराण के अध्ययन के लिए ही आया करूँगा। मेरे घर जब-जब तुम

आओगे, तब-तब अपने साथ अपने पुराण ग्रंथों को अवश्य लेते आना।''

उधर माधव की पत्नी सुलक्षणा, सीता से कहने लगी, ''इस बुढ़ापे में रूई की ये बत्तियाँ क्यों बनाती हो? अपने को क्यों इतनी तकलीफ़ पहुँचा रही हो? हाथ-पर हाथ धरे बैठो और आराम से ज़िन्दगी के बाक़ी दिन काटो।''

''जब जवान थी, घर का सारा काम-काज संभालती थी। अब तो आराम से बैठी ही हूँ। बेकार बैठने के बदले अच्छा इसी में है कि कोई उपयोगी काम करूँ,'' सीता ने कहा।

''बैठी रहकर बत्तियाँ बनाने में लगी रहती हो, इसीलिए तुम्हारी बहू तुम्हारे बारे में बिल्कुल लापरवाह है। बैठी की बैठी रह जाती हैं। तुम्हें देखने पर वह खड़े होने का नाम भी नहीं लेती। रसोई बनाते समय, घर को संवारते समय तुम्हारी सलाहें ही नहीं लेती। तुमसे पूछने की कोई ज़रूरत ही महसूस नहीं करती। कहीं वह तुम्हें परायी तो समझ नहीं रही है? वह शायद भूल ही जाती है कि इस घर में तुम बड़ी हो और तुम्हारा आदर करना उसका कर्तव्य है।'' सुलक्षणा ने हाव-भावों के साथ कहा।

इस पर सीता ने मंद मंद मुस्कान के साथ कहा, ''पहले मैं भी ऐसा ही समझा करती थी। आसपड़ोस वालों से मैं बहू की शिकायत करती थी, उसे कोसती रहती थी। इससे मेरे मन की शांति उचट गयी। मैं सदा अपने को अशांत महसूस करने लगी। अपनी बहू के प्रति प्रतिकार की भावना मेरे मन में तीव्र होती गयी, जिसके कारण मेरा रक्त चाप बढ़ गया और बीमार पड़ गयी। तब वैद्य ने मुझे सलाह दी कि मैं चुप बैठी न रहूँ और किसी काम में व्यस्त रहूँ। फ़ुरसत ही फ़ुरसत हो तो मनुष्य के मन में अनावश्यक ही संदेह जगते हैं। उसका मन शैतान का घर बन जाता है। किसी उपयोगी काम में व्यस्त होने पर किसी में कोई बुराई नाकामी दिखाई नहीं देती। घर की सुख-शांति का राज अब सुलक्षणा को समझ में आ गया।
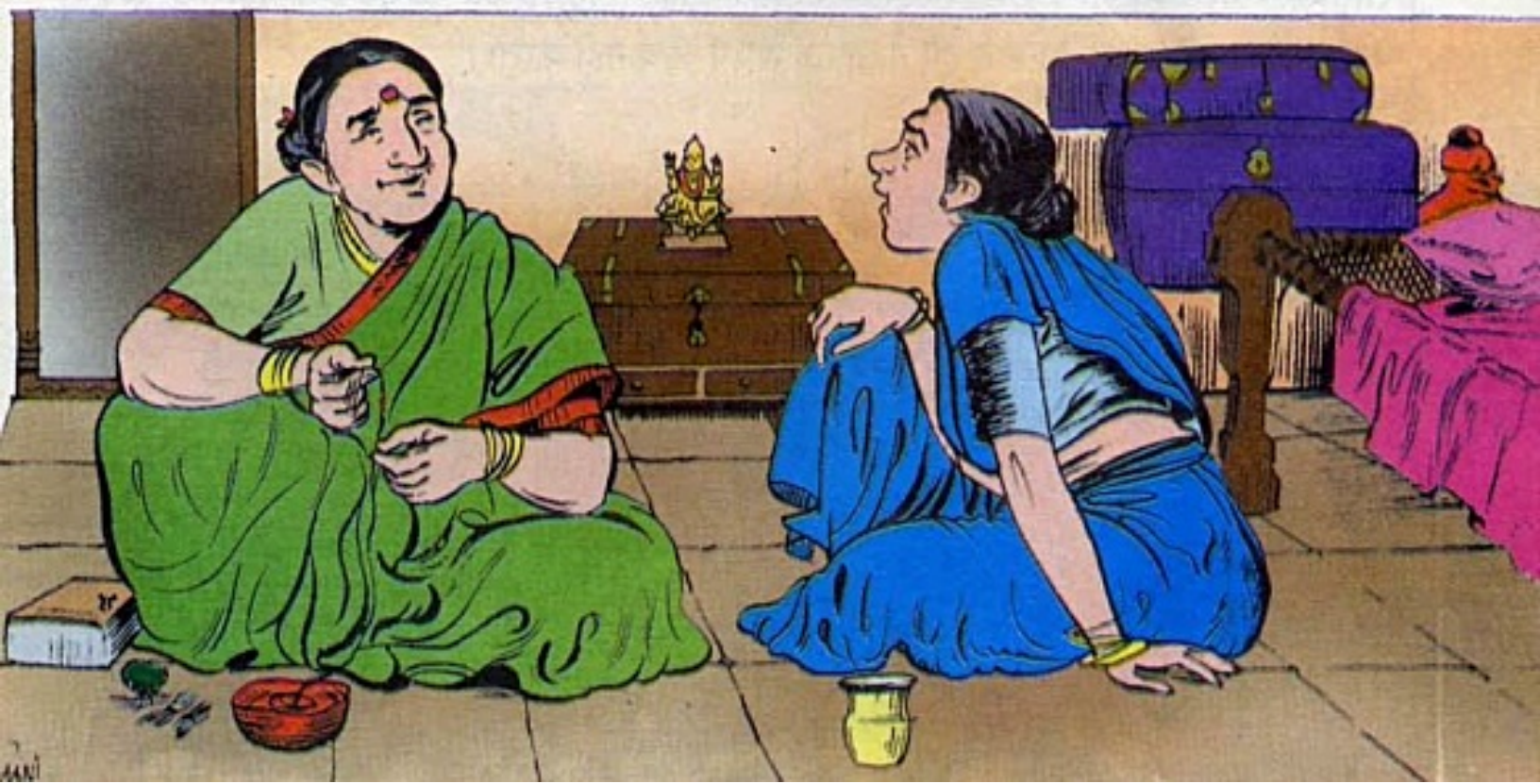
भूस्वामी की उम्र

द्रोणपुरी के राजा मणिचंद्र की अकाल मृत्यु हो गयी। पचीस साल का युवक उसका बेटा भुवनचंद्र गद्दी पर बैठा और शासन-भार संभालने लगा। राज्य के शासन की देखभाल के लिए समर्थ मंत्री थे, इसलिए वह अक्सर शिकार करने जाया करता था। दस-पंद्रह दिनों के बाद ही वह राजधानी लौटता था।

एक बार भुवनचंद्र आखेट पर गया। रात हो चुकी थी। वह अपने सैनिकों से पूछ ही रहा था कि इतनी रात के समय कहाँ ठहरें, शेखरवर्मा नामक एक भूस्वामी वहाँ आया। उसके घर पधाकर आतिथ्य स्वीकार करने की उसने राजा से बिनती की।

उस रात को भोजन कर चुकने के बाद बातों के सिलसिले में भुवनचंद्र ने शेखरवर्मा से पूछा, ''तुम्हारी क्या उम्र है?''

''महाराज, साठ से लेकर सत्तर तक की उम्र होगी'', शेखरवर्मा ने कहा।

उसके इस उत्तर पर चकित भुवनचंद्र ने कहा, ''तुम्हारी उम्र बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती उम्र को लेकर तुम्हें सावधान रहना चाहिए। क्या कभी इसके बारे में सोचते भी हो या नहीं?''

शेखरवर्मा ने इस पर मुस्कुराते हुए कहा, ''महाराज, कितने ही एकड़ों की मेरी उपजाऊ भूमि है, घर में दो बड़ी-बड़ी जो काठ की पेटियाँ हैं, उनमें सोना और चांदी भरे हुए हैं। उनके बारे में, मैं सदा सावधान रहता हूँ, क्योंकि उनके लूट जाने की संभावना है। पर मेरी उम्र को लूटने की कोशिश भला कोई क्योंकर करेगा? उसे गिनते हुए मैं अपना समय व्यर्थ नहीं करता।''

- काशीनाथ.

चंदामामा प्रस्तुति
अजेय गरूड़ा
चित्र : फानि
चन्द्रपुरी के स्वर्गीय प्रधानमंत्री के पुत्र आदित्य ने सेनापति नरेन्द्रदेव और उसके बेटे रविन्द्रदेव को हर जगह परास्त किया, जब भी वे मुखौटा पहने गरूड़ा को पकड़ने की कोशिश करते। राजा महेन्द्रदेव ने आदित्य को मुख्यमंत्री बना दिया। पिता द्वारा दिये गए आदेश के अनुसार सातवीं पूर्णिमा की रात को गरूड़ा की पूजा की। और एक आश्चर्य देखा। पूरा कमरा प्रकाशमय हो गया। जो पंख मूर्ति के सामने रखा गया था वह उड़ने लगा और आकार में बड़ा हो गया।

वह प्रकाश पूरे तरीके से आदित्य पर छा गया और आदित्य को महसूस हुआ कि उसका शरीर परिवर्तित हो रहा है।
जैसे उसका शरीर पंखों से पूरा ढक गया।

उसके सिर पर चील की भाँति एक ताज था। उसकी आँखें लाल हो गयीं। और उसके पाँव धातु से ढक गए तथा काफी मजबूत हो गए।

हे भगवान ! आप दयावान हैं! मैं अपने कर्तव्य और मातृभूमि के प्रति ईमानदार रहूँ। लेकिन हे भगवान! मैं किस प्रकार इस रूप में बाहर जाऊँ?
हे पुत्र! तुम्हें ही यह बदलाव महसूस होगा। अन्य लोग तुम्हें तुम्हारे उसी रूप में देखेंगे। तुम्हारे पूर्वजों के द्वारा पूजा किए जाने का फल यह है कि तुम्हें आज मेरी शक्ति तुम्हें मिली है।
जिसका प्रयोग तुम अपनी रक्षा और मातृभूमि की रक्षा के लिए करोगे। मेरे भगवान भी तुम्हारी रक्षा करेंगे और तुम्हारे सभी कार्यों को पूरा करें।
आदित्य! मैं यहाँ इसलिए प्रस्तुत हुआ हूँ कि तुम्हें कोई नुकसान न पहुँचे। मुझे तुम पर गर्व है! पुत्र! भगवान ने शायद तुम्हें अपने चुने हुए शस्त्र के रूप में बनाया है। तुम्हारी जीत होगी!
आदित्य के आसपास जो प्रकाश था वह एकत्र होकर उसके शरीर में प्रवेश कर गया। उसने अपने आसपास एक घेराव, रक्षा कवच पाया।

इस समय कौन हो सकता है?
कक्ष में पुनः अंधेरा छा गया। आदित्य ने दरवाजे पर खटखटाहट सुनी।

अरुणा ! तुम?
जैसे ही मैं जा रही थी, मैंने एक प्रकाश देखा और बेहोश हो गयी। जब मैं यहाँ आयी तो देखा कि तुम्हारे दोनों अंगरक्षक भी बेहोश पड़े हुए थे। तुम तो ठीक हो आदित्य?

मैं ठीक हूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करूँगा कि यह जो अनुभव हम दोनों को हुआ, उसे किसी को न बताओ। अब तुम यहाँ आ गयी हो तो यह रामसिंह को दे देना।
आदित्य अभी भी तुम्हारे आसपास एक कवच है। मुझे तुम्हारा संदेशवाहक बनकर गर्व है। अच्छा अब मैं निकलती हूँ।

लेकिन मुझे ही क्यों पिताजी? मैं एक आम आदमी हूँ।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी इच्छाओं की पूर्ति करूँगा और उसी के लिए जीऊँगा।

उसी समय गरूड़ा की भाँति मुखौटा पहने बहुत से लोग आए और दंगा मचा दिया।

समाचार आदित्य के पास पहुँचा।
श्रीमान यह नरेन्द्रदेव की शरारत है।
रामसिंह हमें उनका पर्दाफाश करना होगा।

महाराज के कक्षा में अगले दिन।
गरूड़ा के रूप में जो लोग पकड़े गए वे एक नहीं छः लोग थे।

जनता के सामने उन्हें कल फाँसी दे दी जायेगी। इसकी घोषणा करवा दो!
जैसी आपकी इच्छा महाराज!

पूरे राज्य में इसकी घोषणा कर दी गयी।

रविन्द्रदेव परेशान हो गया।
अब हम क्या करें?
हमें जनता के सामने फाँसी होने को रोकना होगा।
क्रमशः

एक प्रश्नोत्तरी आपके लिए

चिलिका झील

उड़ीसा की चिलिका झील की प्राकृतिक छटा का अवलोकन कीजिए, जो एशिया में नमकीन पानी की सबसे बड़ी झील है। पक्षियों को निहानेवाले यहाँ पर १,१०० वर्ग कि.मी. के क्षेत्र पर भाँति-भाँति के पक्षियों को देख सकते हैं। अनगिनत पक्षी जैसे- सफेद समुद्री चील बैगनी रंग की मूरहेन, और हेरोन से झील की शोभा बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त अन्य फ्लैमिंगोल भी यहाँ सर्दियों में आ जाते हैं।

हल्के संतरी रंग के फ्लैमिंगोज चिलिका झील के विशेष आकर्षण हैं।

जंगली जानवरों की एक बड़ी तादात और प्रकार यहाँ उपलब्ध है। जिसमें चीतल, काला हिरन, बंदर, फिशिंग कैट्स, साँफ और छिपकलियाँ यहाँ देखी जा सकती है।

आप झील के आस-पास जहाज में इधर-उधर आयरलैण्ड में घूम सकते हैं जो झील को मोटर लाँच से चिन्हित करते हैं। नाव और मछली मारने का प्रावाधान भी है। जो पानी के खेलों में रुचि रखते हैं वे पानी के खेलों वाले हिस्से में आनन्द लूट सकते हैं। चिलिका झील का संगम यहाँ से २८ कि.मी. दूर सत-पड़ा पर होता है जहाँ आप कुछ डॉल्फिन भी देख सकते हैं।

यहाँ कैसे जाया जाएँ :- पुरी, कटक और भुवनेश्वर से बसें और टैक्सियाँ मिल जाती हैं। कोलकत्ता और चेन्नई का रास्ता चिलिका को होता हुआ बालूगाँव, चिलिका और राम्भा तक जाता है। सबसे नजदीक हवाई अड्डा भुवनेश्वर है जो यहाँ से १०० कि.मी. दूर है।

एक प्रश्नोत्तरी आपके लिए !
प्रतिस्पर्धा - II
१४ वर्ष तक के बच्चों के लिए।

१. चिलिका झील के पास स्थानांतरित पक्षियों का एक उद्यान है। उनमें से कौनसा पक्षी अधिक आकर्षक है?

----

२. उड़ीसा में वह कौन सा एकमात्र उद्यान है, जहाँ दक्षिणी अफ्रीका के पेसिफिक रिडली समुद्री कछुए अपना घर बनाए हैं?

----

३. उड़ीसा का एक प्रसिद्ध चिड़िया घर एक प्रकार के बहुमूल्य चीता की नस्ल के लिए प्रसिद्ध है। चिड़िया घर का नाम बताईए और चीता के बारे में भी।

अपने उत्तर प्रश्नों के नीचे दिए गए खाली स्थानों में लिखो और नीचे दिए गए कूपन को भरकर इस पते पर भेजिए।

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन.................. फोन ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3-days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar - 751 014. Ph : (0674) 432177, Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अगस्त अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

शिव भगत राम

हरिजन विद्यालय, सदर बाज़ार,
बैरकपुर, उत्तर चौबीस परगना,
पिन - ६४३ १०१, पश्चिम बंगाल.

विजयी प्रवृष्टी

''पालतू को गृहवास ।
जंगली को वनवास''

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) OCTOBER 2001 Regd. with RNI. No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001